ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 1 अंक : 4 अप्रैल - मई 2011 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

अक्षय तृतीया (परशुराम जयन्ती) पर दान का विशेष महत्व	डा. महेश पारासर	4
आपके प्रश्नों के समाधान	डा. महेश पारासर	5
आपकी वास्तु समस्या का समाधान	पं. अजय दत्ता	5
शरीर पर पाये जाने वाले तिल का प्रभाव	डा. रचना भारद्वाज	6
मुख्य द्वारा का महत्त्व	डा. श्रीमती शोनू मेहरोत्रा	7
कष्ट निवारणार्थ करे देव आराधना	डा. कविता के अगरवाल	8
द्वादश भाव स्थित कारक–ग्रहों का फलादेश	सीताराम सिंह	9
गोचरीय ग्रहों का फल	श्रीमती रेखा जैन	10
तलाक के लिए कौन जिम्मेदार 'अभिभावक , समाज या ज्योतिषी ?'	पं. दयानन्द शास्त्री	11
रोग और वास्तु	पं. अजय दत्ता	12
तिलक लगाने का प्रचलन क्यों?	पवन कुमार मेहरोत्रा	12
जातक का स्वभाव, क्षमता और माता–पिता का सुख बताता है द्वादशांश	आचार्य डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मयंक'	13
गो–मूत्रकी तुलनामें कोई महौषधि नहीं	डॉ. सतीश शर्मा	14
सूर्यनमस्कार ॐ प्रणामासन	योगाचार्य प्रभुदयाल गुप्ता	14
रेकी जीने की शक्ति	मोनिका गुप्ता	15
786 अंक हिन्दूओं के लिए भी शुभ है	सुरेश अग्रवाल	15
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	16–17
कुसंगति	विजय शर्मा	18
पूजा की सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा ए. डी. ऑफसैट, 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर 6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC

"प्रधान संपादक की कलम से"

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

अक्षय तृतीया (परशुराम जयन्ती) पर दान का विशेष महत्व

बैशाख शुक्ला तृतीया 'अक्षय तृतीया' का पर्व है। पुराणों में 'त्रेतायुग' का आरम्भ इसी दिन से होना लिखा है। इस दिन अन्न जल दान की बड़ी महिमा बताई गई है यथा–

यत्किन्जिद्दीयते दानं स्वल्पं वा यदि वा बहु।
तत्सर्वमक्षयं यस्मात्तेनेयमक्षया स्मृता।।

अर्थ–क्योंकि इस दिन किए हुए थोड़े या अधिक दान का फल सदा के लिए अक्षय हो जाता है इसलिए यह तिथि 'अक्षय तृतीया' के नाम से स्मरण की गई है। जब यह दान निःस्वार्थ भाव से हो तो उसका अक्षय होना अनिवार्य ही है।

इस धार्मिक पर्व में हमें प्राचीन भारत की उस सामाजिक अर्थ–व्यवस्था की झलक मिलती है जिसके अनुसार जनता बिना किसी दबाव या कानून के , केवल धार्मिक–प्रवृत्ति से प्रोत्साहित होकर अन्न या जल की कमी जैसी राष्ट्रीय समस्याओं का मुकाबला किया करती थी।

शास्त्रादेशानुसार आज के दिन प्रत्येक व्यक्ति 'भुने हुए जौं का बूरा आदि मीठे से मिश्रित आटा (सत्तु–जो कि अपने आपमें सुपाच्य पूर्ण भोजन है) दान करता है। आधा वैशाख बीत चुका है, गरमी अपनी चरम सीमा पर है दिन भर भुल साने वाली लूएं चलती है। आज से लोगों की पिपासा शान्ति के लिये प्याउओं की स्थापना होगी और मार्ग चलते पथिक रास्ते में स्थापित प्रपा–शालाओं की सुखद छाया में बड़ी भर विश्राम पाने में समर्थ हों सकेंगे। यह प्याऊ आदि की व्यवस्था भारत की ही अपनी विशेषता है। विदेशों की तरह यहां पानी बिकता नहीं, कि राह चलते प्यास लगे तो जेब से चार पैसे खर्च करके ही पानी का गिलास मिले। यहां तो सारी गरमी भर पीने के ठंडे पानी का प्रबन्ध होता है जिससे इधर–उधर आने–जाने वाले यात्रियों और कार्यव्यस्त लोगों को प्यास लगने पर अनायास ही जल मिल सके। यह पुण्यकार्य अक्षय तृतीया से ही आरम्भ होता है। जौं का आटा जिसे हम सत्तू नाम से पुकारते हैं गर्मी के लिए तो साक्षात् अमृत ही हैं। जौं गर्मी को शान्त करने वाला, सुपाच्य तथा हल्का भोजन है। शास्त्रों ने इसे देवान्न में परिगणित किया है। जौ का उबला हुआ पानी बीमारी के लिये भी लाभदायक है, इसे डाक्टर लोग भी इसे बताया करते हैं, यह पानी लूओं की भी परम औषध है। इसीलिए शास्त्रकारों ने इस ऋतु में यब–भक्षण और यव–दान का विशेष महत्व वर्णित किया है। संक्षेप में त्यौहार हमें यथा ऋतु त्याग और परोपकार का पाठ पढ़ाता है।

उदण्ड शासकों को दण्ड देकर धर्म संस्थापन अपने वाले ब्राह्मण–बंशावतंश भगवान् परशुराम जी का जन्म दिन होने के कारण आज के दिनका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। परशुराम जी की पितृ–भक्ति इतिहास में सुप्रसिद्ध है। उनका पराक्रम और रण–कौशल भी आजी निर्बल और दीन–हीन ब्राह्मण जाति के लिए प्रेरणा–वाह हो सकता है, अतः उस महापुरुष की ऐतिहासिक स्मृति को उज्जवल रखते हुए हमें उनके पद चिंहों पर चलना चाहिये।

महेश पारासर

पाठकों के पत्र

आदरणीयद पारासर जी,

मैं आपके द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''भविष्य निर्णय'' का नियमित पाठक बन गया हूँ। आपकी पत्रिका को पढ़ने के बाद मेरी कुछ समस्याओं का समाधान हो गया। पत्रिका से मेरे परिवार का चहुंगुणी विकास हुआ है। कुछ लेखों को पढ़कर ही मेरा ज्योतिष के ऊपर विश्वास बहुत बढ़ गया है। इतनी अच्छी पत्रिका का प्रकाशन करने के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

सतीश मिश्रा
रामबाग, आगरा।

पुज्य गुरूजी,

मैंने पिछले माह अपने आगरा भ्रमण के दौरान अपने एक मित्र के घर आपके द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका ''भविष्य निर्णय'' का दर्शन किया। पत्रिका को पूरा पढ़ने पर ज्ञात हुआ पत्रिका बेहद उत्तम है। उम्मीद करता हूँ आप ऐसे ही पत्रिका की गरिमा को बनाये रखेंगे तथा ज्ञानवर्धक चीजों का प्रकाशन करते रहेंगे। ऐसी पत्रिका का प्रकाश करने के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

नवीन शांडिल्य
मुम्बई (महाराष्ट्र)

अमृत वचन

अज्ञान की अनुभूति ही ज्ञान का द्वार खोलती है। यदि अज्ञान न हो तो ज्ञान का महत्व ही समाप्त हो जाता है।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– नौकरी में मन नहीं लगता ?

उत्तर लग्न में शनि एवं सम्तम भाव में मंगल होने के कारण मन नहीं लगता। आप त्रिकोण मंगल यंत्र की रोजाना पूजा करें एवं शनिस्तोत्र का तीन बार पाठ करें। रोजाना हनुमान जी के दर्शन करें। 20–25 दिन बाद सुधार आना शुरू होगा।

राकेश खुराना – खुर्जा

प्रश्न: चलते हुये व्यापार में रूकावटें आना शुरू हो गयी है। उनाय बतायें?

उत्तर: राहु में शुक्र की अर्न्तदशा अगस्त 2011 से शुरू हुई है। आप चिटियों को दाना, शुक्र मंत्र एवं गुरू मंत्र का जाप रोजाना करें। सीधे हाथ की कनिष्ठा उंगली में पन्ना 6.25 रत्ती का चांदी में बुध्वार को धारण करें।

शेलेन्द्र – आगरा

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– अपने मकान का नक्शा तथा अपने कमरे का नक्शा आपको प्रेषित कर रहा हूँ। आर्थिक व मानसिक रूप से बहुत परेशान हूँ। प्रत्येक कार्य में रूकावट का सामना करना पड़ता है। उचित उपाय बताये ? प्रभुदयाल गुप्ता–अजमेर

समाधान– आपके मकान का नक्शा देखा। पूर्व-उत्तर के कोने पर बनी हुई आपकी रसोई आपको मानसिक चिन्तायें, आर्थिक समस्यायें ही प्रदान करेगी। रसोई शीघ्र अति शीघ्र दक्षिण-पूर्व की ओर स्थापित करें। आप कमरे में अपना बेड दक्षिण-पश्चिम की दिशा में लगायें तथा सोते समय सिर दक्षिण की ओर रखें। शीघ्र लाभ मिलेगा।

समस्या– मेरा किरायेदार मकान खाली नहीं कर रहा है, कारण व उपाय बतायें ? सोमेश वर्मा- हापुड

समाधान– आपके किरायेदार के पास आपके मकान का दक्षिण-पश्चिम तथा दक्षिण-पूर्व हिस्सा है तथा आपके पास मकान का उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व हिस्सा है। ऐसे में मतभेद होना स्वाभाविक है। निसन्देह मकान खाली कराने में बहुत दिक्कत आयेगी। फिर भी आप स्वंय अनुकूल होने पर एक मूंगा रत्न धारण करें तथा त्रिकोण मंगल यंत्र की पूजा विधि विधान से प्रारम्भ करें तथा किरायेदार से सम्बन्ध मधुर बनाने के प्रयास करें, जल्द ही समस्या का कोई स्थायी समाधान होता दिखायी देगा।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

शरीर पर पाये जाने वाले तिल का प्रभाव

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

तिल एक बहुत छोटा चिन्ह है, परन्तु वह शरीर के किस हिस्से में है इसका विलक्षण प्रभाव देखने को मिलता है। अलग–अलग स्थानों पर इसका अलग–अलग महत्त्व है। तिल कई प्रकार के होते हैं जैसे सफेद तिल, लाल तिल, पीले तिल एवं काला तिल। लाल तिल व पीले तिल की उपस्थिति जातक को रोगी बनाती है। सफेद तिल व काले तिल शुभ व लक्ष्मीदायक माने जाते हैं। यहां हम काले तिल की विभिन्न स्थानों पर उपस्थिति का विवेचन कर रहे हैं।

मस्तक पर तिल होने पर पुरुष को समाज में प्रतिष्ठा मिलती है। यह यदि स्त्रियों के मस्तक पर हो तो उन्हें किसी उच्चाधिकारी की पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

ललाट पर तिल जातक को धन–सम्पत्ति दिलाता है। उसके जीवन में पैसे की कमी नही। भौहों पर तिल जातक को विदेशी यात्राओं से आर्थिक लाभ प्राप्त कराता है। आँख या गाल पर काला तिल जातक को अधिकार सम्पन्न और ऐवर्श्य सम्पन्न बनाता है।

ऊपरी होंठ पर तिल जातक को धनी बनाता है। लेकिन जातक जिद्दी होता है। वह अपनी बात पर अड़ा रहता है। जिससे उसे सामाजिक, आर्थिक नुकसान होता है।

होंठ के नीचे तिल वाला जातक मितव्ययी होता है। उसके हाथ सें पैसे नहीं निकलते। जिस जातक की हथेली में तिल हो तथा मुठ्ठी बन्द करने पर भी वह मुठ्ठी के अन्दर ही रहता हो तो उस जातक को जीवन भर धन की कमी नहीं रहती। ऐसा जातक भाग्यशाली होता है। जिस जातक की हथेली में मुठ्ठी बन्द करने पर तिल अन्दर न रहकर बारह दिखाई दे तो ऐसे जातक धनी होते हुए भी पैसों के लिए मोहताज रहते हैं अर्थात् हाथ में पैसा आता अवश्य है लेकिन वह रुकता नहीं है।

जिस जातक की हथेली में चन्द्रपर्वत पर काला तिल हो वह जरुरत से ज्यादा चालाक होता है। उसके जीवन को जल से खतरा रहता है। ऐसे व्यक्ति को सर्दी–जुकाम लल्दी होता है।

जिस जातक की हथेली के मंगल पर्वत पर काला तिल हो ऐसे व्यक्ति कायर व डरपोक होते हैं तथा उनके जीवन को हिंसा का अग्नि खतरा रहता है। जिस जातक की हथेली के बुध पर्वत पर काला तिल हो वह ठग होते है। उनको व्यापार में अकस्मात हानि होती है। जिस जातक की हथेली के गुरु पर्वत पर काला तिल हो ऐसा जातक प्रेम में बदनामी पाता है। उसका विवाह बहुत ही मुश्किल से हो पाता है। उसका वैवाहिक जीवन भी कष्टप्रद होता हे।

जिस जातक की हथेली के शुक्र पर्वत पर काला तिल हो ऐसा जातक गुप्त रोग से पीड़ित हो सकता है। ऐसे जातक प्रायः बुरी लत के शिकार होते हैं। प्रेम या शुक्र संबंधी दोष होता है। यह वीर्य (पुरुष) रज (स्त्री) विकार का सूचक होता है।

जिस जातक की हथेली के सूर्य पर्वत पर काला तिल हो ऐसा जातक बदनामी प्राप्त करता है। ऐसा जातक कभी भी सिर उठाकर जीवन–यापन नहीं कर पाता। समाज में कोई मान–प्रतिष्ठा नहीं होती। जिस जातक के हाथ के अंगूठे के बगल में तिल हो वह जातक अधिक यात्रायें करने वाला होता है।

यदि तर्जनी उंगुली के बगल में काला तिल हो तो जातक धनी–लेकिन द्वेष करने वाला होता है। कभी–कभी ऐसे जातक गलत कार्यो के माध्यम से धन अर्जित करते हैं जिससे बदनामी होती है, मान प्रतिष्ठा को धक्का लगता है।

यदि मध्यमा उंगुली के बगल में तिल हो तो जातक शांत एवं सुखी होता है। लेकिन काला तिल मध्यमा अंगुली के प्रथम पोरुआ में बने तो जातक को किसी विश्वसनीय व्यक्ति से धोखा खाना पड़ सकता है। ऐसे जातक भाग्यवादी होते हैं।

यदि अनामिका उंगुली पर काला तिल पाया जाता है तो जातक लक्ष्मी व विद्या से युक्त होता है। लेकिन जातक को अपने परिजनों का सहयोग प्राप्त नहीं होता।

यदि कनिष्ठा उंगुली पर काला तिल पाया जाता है तो ऐसे जातक कंजूस प्रवृत्ति का होता है। उसका भाग्योदय 25 से 30 वर्ष की आयु में होता है। उसे संतान पक्ष से सुख मिलता है।

जिस जातक के करतल में तिल पाया जाये उसे लगातार धन की प्राप्ति होती रहती है।

जिस जातक की जीवन रेखा पर काला तिल पाये उसे असाध्य

शेष पेज 19 **पर**...............

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. **09717195756**
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

मुख्य द्वारा का महत्त्व

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445

प्रिय पाठकों, मुख्य द्वार हर घर की पहचान होता है क्योंकि आंगुन्तुक का पहला साक्षात्कार आपके मुख्य द्वार से ही होता है। इसलिये मुख्य द्वार का आकर्षक वास्तुसम्मत एवं सुसज्जित होना नितांन्त आवश्यक है।

वास्तुसम्मत मुख्य द्वार घर में सुख समृद्धि एवं शान्ति के साथ लक्ष्मी आगमन में सहायक होता हैं। मुख्य द्वार रहवासी के आचार व्यवहार एवं रहन–सहन का परिचायक होता है। मुख्य द्वार को देखकर हम यह अनुमान भी सहज ही लगा सकते हैं कि व्यक्ति कितना व्यवस्थित एवं सुरुचिपूर्ण है।

वास्तुशास्त्र में मुख्य द्वार का अत्यधिक महत्व है क्योंकि वास्तु के अनुसार मुख्य द्वार का सही होना किसी भी भवन की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

इस अंक में मैं आपको मुख्य द्वार को वास्तु सम्मत बनाने हेतु कुछ उपाय बताने जा रही हूँ। जिनका पालन करके आप सुख समृद्धि को निमन्त्रण दे सकते हैं।

1. सर्वप्रथम मुख्य द्वार का साफ सुथरा होना अत्यन्त आवश्यक है। मुख्य द्वार के समक्ष किसी भी प्रकार का कूड़ा करकट, गन्दगी, कूड़ेदान, गन्दे पायदान, झाड़ू आदि नहीं होने चाहिये।

2. मुख्य द्वार के समस्त बिखरे जूते चप्पल नहीं होने चाहिये। यह घर में कलह को जन्म देते हैं। इन्हें एक बन्द रैंक में व्यवस्थित करके रखना चाहिये।

3. मुख्य द्वार हमेशा अन्दर की ओर खुलना चाहिये व अन्दर खुलते समय किया भी प्रकार की चरमराहट की आवाज नहीं आनी चाहिये। अन्यथा घर में क्लेश उत्पन्न होगा।

4. मुख्य द्वार को ठीक प्रकार से बन्द करने की व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि यदि द्वार हवा के चलने से भडभड़ाने लगता है तो वह किसी आने वाले संकट को न्यौता देता है।

5. मुख्य द्वार का रंग रोगन या पॉलिश उच्च स्तर की होनी चाहिये। उड़ा हुआ रंग या पॉलिश घर में लक्ष्मी के प्रवेश को रोकती है व धीरे–धीरे व्यक्ति की आर्थिक स्थिति में गिरावट आने लगती है।

6.मुख्य द्वार के समक्ष सुन्दर रंगोली एवं लक्ष्मी चरण बनाकर घर में धन आगम की व्यवस्था को सुदृढ़ करें।

7. घर के मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्हों का प्रयोग करें जैसे श्री, शुभ–लाभ इत्यादि या आप जिस धर्म को मानने वाले हैं उस धर्म का प्रतीक चिन्ह भी मुख्य द्वार पर लगाना चाहिये। यह घर में शुभ ऊर्जा का प्रवाह बनाये रखती है वह घर के अन्दर नकारात्मक ऊर्जा के प्रवेश को वर्जित करती हैं

8. घर के मुख्य द्वार पर कपड़े न सुखाये। यह घर में आने वाली सकारात्मक ऊर्जा को रोकता है।

9. मुख्य द्वार पर तोरण या बन्दनवार लगाना घर में शुभ ऊर्जा को बढ़ाता है।

10. पूर्वी या उत्तरी ईशान का द्वार होने पर रुद्राक्ष तोरण शुभ होता है। दक्षिणा आग्नेय द्वार होने पर कलात्मक एवं शीशों से युक्त तोरण होना शुभ होता है। पश्चिमी वायव्य द्वार होने पर घंटियो वाले बन्दनवार या विंड चाइंम्स लगाना शुभ होता है। पूर्वी या उत्तरी ईशान का द्वार होने पर उसके आगे हरे भरे पेड़ पौधे अवश्य लगायें, लहराते हुये पौधे घर में नयी शक्ति का संचार करते हैं। विशेष रुप से फूलों से युक्त पौधे बहुत ही शुभ शक्तियों का प्रवाह बनाये रखते है।

11. मुख्य द्वार पर किसी भी प्रकार का वेद होने पर जैसे–खम्बा, पेड़, कीचड़, लिफ्ट, सीढ़ियां इत्यादि होने पर पाकुआ शीशा लगायें। ध्यान रखें कि यह शीशा घर के अन्दर किसी भी हालत में न लगायें यह शीशा हर हाल में मुख्य द्वार के बारह ही लगाया जायेगा। ताकि बाहर से आने वाली नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त कर सके।

12. घर का मुख्य द्वार घर के अन्य द्वारों की अपेक्षा अधिक सुन्दर, बड़ा व सुसज्जित होना चाहिये। पश्चिम या दक्षिण दिशा में द्वार होने पर पत्थरों के टाइल्स, भारी बड़े गमलों में रोकरी गार्डन, हाथी की मूर्तियां या चित्र लगा सकते हैं।

13. पश्चिमी दिशा में द्वार होने पर गणपति की तस्वीर लगा सकते हैं परन्तु ध्यान रहे उनकी पीठ के पीछे भी उसी आकार की तस्वीर लगायें। दक्षिणी द्वार होने पर पंचमुखी हनुमान जी का चित्र लगा सकते हैं। उत्तरी दिशा में द्वार होने में लक्ष्मीजी का चित्र एवं पूर्वी दिशा में द्वार होने पर सूर्य भगवान चित्र स्थापित किया जा

शेष पेज 19 पर...............

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

कष्ट निवारणार्थ करे देव आराधना

डा. (श्रीमती) कविता के अगरवाल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ
मो.- 9897135686, 9219577131

हिन्दू धर्मानुसार 33 करोड़ देवी देवता मान्य है। अनेक वेदों और पुराणों में उनकी विविध गाथाएं तथा पूजा अर्चना की विधियां दी गयी है। गीता के तीसरे अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि मानव मात्र को देवी देवताओं की आराधना, यस, हवन, दान मंत्र जप इत्यादि उन्हें प्रसन्न करने के लिये करने चाहिये इसके निमित्त देवी देवता भी उन्हें पर्याप्त सुख, भोग, अन्न इत्यादि प्रदान करेंगे।

इसलिये अराधक, अपने सभी कष्टों के निवारणार्थ अटूट विश्वास व पूर्ण मनोयोग से अपने अराध्य में सम्पूर्ण देवताओं को देखता है। परंतु देखा जाय तो एक देव अराधना द्वारा सम्पूर्ण कष्टों का निवारण कर सकने में कोई योगी ही सफल हो सकता है।

सभी देव, ग्रह आदि कर्म के अधीन है ये अपने–अपने विशिष्ट कार्य वर्ग में प्रतिष्ठित है। इन सभी देवताओं का मनुष्य जीवन में प्रमुख स्थान है। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुऐ, दुखादि दूर करने व सुख शांति के लिये सभी की वंदना स्तुति करनी चाहिये।

एका मूर्तिन सम्पूज्या गृहिणा स्वेष्टमिच्छता।
अनेक मूर्ति सम्पन्नः सर्वान कामानवाप्नुयात।।

भगवान गणेश– ये आदि पूज्य है। सहज बाल स्वभाव के कारण ये बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाते है। विघ्न बाधा निवारण विद्या की प्राप्ति, रोग युक्ति, श्री सम्पत्ति प्राप्ति पारिवारिक प्रेम, संकट नाश, पुत्र प्राप्ति के लिये इनकी आराधना करनी चाहिये।

भगवान शंकर– इच्छित फल बिनु शिव अवराधे। मिलइ न कोटि जो जप साधे। विद्याओं की कामना करने वालों के लिये शंकर जी की पूजा जरुरी है ऐसा शास्त्राअें में विदित है। शनि की ढैय्या हो या साढेसाती अथवा दशा–अर्न्तदशा कष्टप्रद हो असाध्य रोग मृत्युतुल्य कष्ट के निवारण के लिये शिवजी की अराधना रामवाण का काम करती है।

पवन सुत हनुमान– हनुमानजी का स्मरण करते ही भूत प्रेत बाधा तक दूर हो जाती है। शनि की पीड़ा हो, अनिष्टकारी मंगल का अमंगल, राहू–केतु की वज्रधाती पीड़ा, हनुमानजी की आराधना, करने से दूर हो जाती है। जिन्हे अंजनी सुत पर भरोसा है। उनके ऊपर शंकर–पार्वती और राम, लक्ष्मण एवं जानकी का अनुग्रह प्राप्त होता है।

यशोदानंदन कृष्ण–संतान अभाव रुपी कष्ट के निवारण के लिये भगवान श्रीकृष्ण की आराधना करनी चाहिये। जपकाल में संतान गोपाल यंत्र की स्थापना एवं संतान गोपाल स्त्रोत का सुबह शाम पाठ करने से संतान प्राप्ति सम्भव है।

भगवान विष्णु– 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' द्वादश अक्षर महामंत्र का जाप करने से दुख कम होने लगते है और सुख का आभास होने लगता है। उनके आठ नाम, सोलह नाम, अड्डारह नाम, शत नाम, सहस्त्र नाम का पाठ करने से कष्टों का शमन व धन धान्य की प्राप्ति होती है।

इसी प्रकार धनप्राप्ति के लिये लक्ष्मी साधना विद्या प्राप्ति के लिये सरस्वती साधना तथा विधिध मनोकामनाओं की पूति हेतु अलग–अलग देवी देवताओं की साधना की जाती है। पंथ तत्वानुसार देव आराधना–मानवशरीर पाँच तत्वों का सम्मिश्रण है। मनुष्य का स्वभाव नैसीर्गिक रुप से पंचतत्वात्मक ही है।

–आकाश तत्व प्रधान जिन जातकों में सतगुणों की अधिकता होती है उनके लिये भगवान विष्णु की सेवा आराधना फलदायी होती है।

–वायुतत्व प्रधान जिन जातकों की प्रवृत्ति सतोगुणी होने पर भी रजोगुण से युक्त है उनके लिये सूर्य की आराधाना शुभदायी होती है।

–अग्नितत्व प्रधान जातक जिनकी प्रवृत्ति रजोगुणात्मक होती है, उनके लिये शक्ति स्वरुपा भवानी की आराधाना श्रेयस्कर होती है।

–जल तत्वों में रज और तम का सम्मिश्रिण होता है। ऐसे जातकों में रजोगुण व तमोगुण दोनों का अंश विद्यमान होता है ऐसे व्यक्तियों को भगवान गणेश की आराधना करनी चाहिये।

–पृथ्वी तत्व के अधिदेवता शिव है। तामसिक प्रवृत्तियों की अधिकता जिन जातकों के अधिक है, व सत, रज, तम गुणों से युक्त जनों के लिये भगवान शंकर की आराधना कष्ट निवारण में सहायक होती है। इन्हें सृष्टि का संहारक देव रुद्र कहा जाता है।

अपने समस्त जीवन के सभी कष्टों के निवारणार्थ प्रतिदिन निम्न पूजा एवं स्तुति कर सकते हैं।

1. गणेश स्तुति
2. पुरुसूक्तं
3. श्री सूक्तं
4. नवग्रह देवताओं का पूजन
5. भगवान शंकर का अभिषेक
6. तुलसी व अन्य पेड़ पौधों की सुरक्षा
7. अंहिसा का पालन
8. माता–पिता एवं गुरु का सम्मान

इनके अतिरिक्त बुरी आदतों से परहेज व सत्य का आचरण करना चाहिये। यज्ञ दान तप आदि कर्म किसी भी स्थिति में त्यागने नहीं चाहिये ये मनुष्य को कष्टो से दूर करके पूर्वकृत पाप कर्मो के प्रभाव से बचाते है।

द्वादश भाव स्थित कारक-ग्रहों का फलादेश

सीताराम सिंह,
एम. ए, एल.एल.एम.
एस्ट्रो कॉंऊसलर
नई दिल्ली फोन- 011-26910303

जन्म कुण्डली के 12 भावों में

दुःस्थानंमष्टरिपुव्ययभावभाहुः
सुस्थानमन्यभवनं शुभदं प्रदिष्टम्।।
(फलदीपिका, 17)

अर्थात् "षष्ठ, अष्टम और द्वादश भावों को दुःस्थान (त्रिक भाव), और अन्य भावों को सुस्थान और शुभप्रद माना गया है।"

षष्ट, अष्टम और द्वादश भाव का अधिपति, इनसे दृष्ट वा युक्त ग्रह निर्बल होता है। त्रिक भाव अभाव, कभी और निर्धनता आदि के सूचक है। षष्ठ, अष्टम और द्वादश भावेश यदि निर्बल होकर शुभ भावों में स्थित हों तो शुभ, और यदि बली होकर इन भावों में स्थित हों तो अशुभ, फलदाई होते है। परन्तु त्रिक भावेश इन्ही भावों (6, 8, 12) में स्थित होने पर शुभ फल देते है। इस स्थिति को विपरीत राजयोग' कहा जाता है। इन ग्रहों पर अशुभ प्रभाव होने पर इस योग की शुभता बढ़ती है, परन्तु शुभ प्रभाव अच्छे फल का नाश करता है।

श्री रामानुजाचार्य ने अपने प्रसिद्ध प्राचीन ग्रंथ 'भावार्थ रत्नाकर' के आठवें अध्याय–"भाग्य योग"– में द्वादश भाव स्थित कारक–ग्रहों को सम्बधित शुभ फल दायक बताया है।

यदभावकारको लग्नाद्व्यये तिष्ठति चेद्यदि।
तस्य भावस्य सर्वस्य भाग्ययोग उदीरितः।। 7।।
(भावार्थ रत्नाकर)

अर्थात्, जातक को उस भाव–विषयक बातों से लाभ होगा जिस भाव का कारक लग्न से द्वादश भाव में स्थित हो।"

इस सम्बन्ध में उनके द्वारा दिये गये उदाहरण इस प्रकार हैं।

पितृकारक भानोश्च भाग्यभावेश्वरोपि वा।
उभौ तौ व्ययगौस्यातां पितृभाग्यमुदीरितम्।।
(भावार्थ रत्नकर, 8, 13)

अर्थात्, "यदि पितृकारक सूर्य और नवम् भाव का स्वामी दोनों द्वादश भाव में हो, तो पिता भाग्यशाली होता है।"

व्यये शुक्रस्य संस्थानं कलात्रात्भाग्यमुदेशेत्।
व्यये चन्द्रस्य संस्थानं मातृभाग्यमुदीरितम्।।
(भावार्थ रत्नाकर, 8, 17)

अर्थात् "यदि शुक्र द्वादश भाव में हो तो पत्नी द्वारा भाग्य की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार द्वादश स्थान में चंद्र हो तो माता द्वारा भाग्य की प्राप्ति होती है।"

कुजो व्यये स्थितो यस्य भ्रातृ भाग्यमुदीरितम्।
(भावार्थ रत्नाकर 8, 18)

अर्थात्, "यदि मंगल (भ्रातृकारक) द्वादश भाव में हो, तो भाइयों द्वारा भाग्य की प्राप्ति होती है।"

उपरोक्त श्लोकों पर विचार करने से ज्ञात होता है। कि कारक ग्रहों का द्वादश भाव में शुभ फलदायक होने का कारक ग्रंथाकार में इन ग्रहों का सम्बंधित भावों से शुभ स्थान में होना माना है। जैसेः

(1) पिता के कारक सूर्य की लग्न से द्वादश भाव में स्थिति नवम् (पिता) भाव से चतुर्थ केन्द्र में होगी।

(2) पत्नी के कारक शुक्र की द्वादश भाव स्थिति सप्तम (पत्नी) भाव से षष्ठ होगी। शुक्र की उस स्थिति को अनेक ग्रंथकारों ने शुभकारी माना है।

(3) माता के कारक चनद्रमा की द्वादश भाव स्थिति, चतुर्थ (मातृ) भाव से नवम् होती है।

(4) भ्राता के कारक मंगल की द्वादश भाव स्थिति भ्रात (तृतीय) भाव से दशम केन्द्र में बलवान होती है।

उपरोक्त सूत्र के अनुसार हीः

(5) यद्यपि पुत्र कारक बृहस्पति की द्वादश भाव स्थिति पंचम (पुत्र) भाव से अष्टम होने से पंचम के लिये अशुभ होगी, फिर भी पंचम से आयु स्थानों में पुत्र की आयु के लिए शुभकारी होगी, अर्थात् पुत्र दीर्घायु होगा।

(6) षष्ठ और अष्टम भाव कारक शनि की द्वादश भाव स्थिति षष्ठ से केद्र में तथा अष्टम भाव से पंचम होती है।

'भावार्थ रत्नाकर' ग्रंथ में श्री रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित अनेक ज्योतिष सूत्र सटीक और सर्वमान्य है। अतः विद्वान आचार्यो और ज्योतिर्विदों से विनम्र अनुरोध है। कि वह उपरोक्त सूत्र "दादश भाव से कारक–ग्रहों का फलादेश" पर अधिकाधिक विचार कर उसके सही आँकलन और प्रचलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें।

❋❋❋

वास्तुदोष, आर्थिक, व्यापारिक, मानसिक, शारीरिक, शिक्षा, दुर्घटना, जायदाद, वैवाहिक, घरेलू समस्याओं का यंत्र/मंत्र/रत्न द्वारा समाधान हेतु मिलें

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

डॉ. महेश पारासर ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

गोचरीय ग्रहों का फल

डॉ. श्रीमती रेखा जैन ''आस्था''
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तुशास्त्राचार्य
फोन नं. 0562 3250546

हमारे दैनिक जीवन में ज्योतिषशास्त्र एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ज्योतिष विद्या के माध्यम से ही ग्रहों की स्थिति मालूम करते है। ग्रहों की स्थिति के आधार पर ही समय का शुभ–अशुभ होना मालूम किया जाता है। व्यक्ति पर ग्रहों स्थिति दो प्रकार से अपना प्रभाव डालती है। प्रथमतः जन्म के समय ग्रहों की स्थिति, द्वितीय गोचर ग्रहों की स्थिति।

गोचरीय ग्रह को स्थिति ही हमारे दैनिक जीवन में परिवर्तन की सूचना देती है। प्रश्न उड़ता है कि गोचरीय ग्रह स्थिति क्या है? तो पाठको! गोचरीय ग्रह स्थिति का तात्पर्य है कि कौन सा ग्रह किस स्थान में किस राशि में कैसी अवस्था में स्थित है। इसी आधार पर कर सकते है। आमतौर पर गोचर का विचार मुख्यतः चन्द्र राशि से ही किया जाता है। लेकिन विशेष परिस्थितियों में गोचर के साथ–साथ लग्न कुण्डली के ग्रहों को भी महत्व दिया जाता है।

संक्षेप में सूर्यादि ग्रहों का गोचरीय फल प्रायः इस प्रकार रहता है।

सूर्य– यदि सूर्य चन्द्र राशि में गोचर कर रहा हो तो उपद्रव, धन का नाश, पेट का रोग, ज्वर, मार्ग में कष्ट आदि, द्वितीय राशि में धन का नाश, दुःख नेत्ररोग, कार्यो का असफल होना। तृतीय राशि में स्थान लाभ धन दौलत से युक्त आनन्दयुक्त और शत्रु का नाश। चतुर्थ राशि में रोग, स्त्री से कष्ट, विघ्न वाधाओं की सूचना। पंचम राशि में रोग, शत्रु पीड़ा। षष्ठ में रोग, शत्रु तथा शोक का नाश। सप्तम में भ्रमण, भय। अष्टम में सभी का असहयोग। नवम् में आपत्ति, दीनता, विघ्न। दशम में विजय कार्य सिद्धि। एकादश में विजय स्थान लाभ रोग का नाश। द्वादश में सच्चे मन वाले व सुन्दर स्वभाव वालों की क्रिया फलवती होती है दुर्जनों की नहीं।

चन्द्र– चन्द्रमा जन्म राशि में अन्न, उत्तम शय्या सुन्दर वस्त्र प्राप्त करता है। द्वितीय में पूजा व धन का नाश, तृतीय में वस्त्र, धन विजय और सुख की सूचना देता है। चतुर्थ में व्यक्ति अविश्वासी हो जाता है। पंचम में दीनता रोग, शोक मार्ग में विघ्न वाधा पैदा करता है। षष्ठ में धन और सुख देता है। शत्रु तथा रोग का नाश करता है। सप्तम में वाहन सैय्या पूजा, भोजन धन की उत्तम प्राप्ति कराता है। अष्टम् का चन्द्रमा काफी खतरनाक भयकारी तथा अनिष्टकारी होता है। नवम में बंधन, उद्वेग, खेद की वृद्धि करता है। दशम में प्रभुता और कर्म की सिद्धि, एकादश में धन की वृद्धि मित्र का सहयोग, आमोद–प्रमोद प्रदान करता है। द्वादश में धन की हानि मार्ग में कष्ट वाधा प्रदान करता है।

मंगल– जन्म राशि में मंगल उपद्रव पैदा करता है। द्वितीय में राज पीड़ा कलह, रोग अग्नि दोष, परेशानी देता है। तृतीय में धन, द्रव्य वस्त्र आदि अन्य लाभ। चतुर्थ में ज्वर, रोग रक्त विकार निंदा तथा अशुभ फल का सूचक है। पंचम में शत्रु, रोग, क्रोध, शोक। सप्तम में पत्नी से विरोध, नेत्र व उदर रोग, अष्टम में शरीर में धन, मान की हानि। नवम में शरीर में दुर्बलता, अर्थनाश। दशम में शुभ फल। एकादश में धन सम्मान व विजय। द्वादश में अनेक प्रकार के खर्च, क्रोध, कष्ट बढ़ाता है।

बुध– जन्म राशि में बुध मनुष्य को कठोर, वाम्यचार्तुय, चुगलखोर, शत्रुता तथा धन नष्ट करने वाला बाता है। द्वितीय में अपमान तथा धन का लाभ, तृतीय में मित्र का लाभ शत्रु का भय। चतुर्थ में बधुओं व सम्बधियों की वृद्धि व धन प्राप्ति। पंचम में पुत्र व स्त्री से कलह व दुर्बलता व असफलता षष्ठ में सौभाग्य विजय व उन्नति। सप्तम् में निर्धनता एवं कलह अष्टम में विजय, पुत्र धन, वस्तु का लाभ, नवम में विघ्न कारक दशम में शत्रुनाशक धनदाता, स्त्री शय्या सुख ऐतिहासिक वक्ता। एकादश में धन, सुख, पुत्र, स्त्रीसुख वाहन प्राप्त होना द्वादश में शत्रु अनादर, रोग से पीड़ित होने की सूचना देता है।

गुरु– जन्म राशि का बृहस्पति धन वृद्धि, स्थान का नाश करता है द्वितीय धन प्राप्ति शत्रु विनाश स्त्री सुख प्रदान करता है। तृतीय में स्थान नाश कार्यो में बाधाएं। चतुर्थ में पीड़ित, अशान्ति बधुंओं से परेशानी। पंचम में गुरु, धर्म पुत्र स्त्री धन वस्त्र आदि सभी प्रकार के लाभ देता है। षष्ठ का गुरु मानसिक असंतुलन अशान्ति तथा भय पैदा करता है। सप्तम् में शैय्या भोग, धन वाहन भौजन का सुख। अष्टम में बंधन पीड़ा शोक, क्लेश, कष्ट। नवम् में सभी कार्यो में निपुणता, शुभ कार्य, प्रभाव, धन भूमि सुख। दशम में दीनता अन्न धन की हानि अपनों से अपवाद वेराजगारी, बेकार का भ्रमण। एकादश में आरोग्य वधन की प्राप्ति। द्वादश में पथभ्रष्ट व कष्ट।

शुक्र– जन्म राशि में शुक्र द्रव्य, पुण्य, वस्त्र, धनधान्य का सुख। द्वितीय में संतान, राज्य तथा स्वार्थ संबंधी कार्य में सफलता। तृतीय में शुक्र, प्रभुत्व धन मान स्थान का नाश। चतुर्थ में शुक्र मित्र सहयोग हर्ष उल्लास प्रदान करता है। पंचम में संतोष बंधु सुख पुत्र धन लाभ। षष्ठ में अपमान, शत्रु रोग संताप। सप्तम में ग्रह वस्त्र स्त्री से सम्बन्ध। अष्टम में ग्रह एवं स्त्री सुख, धन प्राप्ति दशम में अपमान कलह एवं अशांति एकादश में मित्र, धन, अन्न द्रव्य का लाभ। द्वादश में धन व वस्त्रों व सुख का लाभ।

शनि– जन्म रशि में शनि विष का अग्नि से पीड़ित वन्धु से दूर भ्रमण शील, विदेश गामी ग्रह धन, पुत्र से दूर रहता है। द्वितीय में शनि रुप व सुख से रहित शरीर वाला, निर्बल तथा अहंकार रहित होता है। तृतीय का शनि धन परिवार गृह वाहन ऐश्वर्य आरोग्य

शेष पेज 19 पर..............

तलाक के लिए कौन जिम्मेदार 'अभिभावक , समाज या ज्योतिषी ?'

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**
मो. नं. **09413103883, 09024390067**
e-mail: vastushastri08@yahoo.com

आज नवविवाहित जोड़ों में 30 प्रतिशत दम्पति पहले दो साल के अन्दर ही तलाक लेने को क्यों प्रेरित हो जाते हैं ? सबसे प्रथम दोष उन परिवारों का होगा जिनके अपने निवास या उनके बच्चों की ससुराल में रसोई या निवास के उत्तर – पूर्व में आग गैस जलेगी। उनके पुत्र–पुत्रवधु परेशान होगी। इनके साथ–साथ जिन परिवारों के सीढ़ियों के नीचे रसोई होगी उनकी लड़कियाँ पुत्रवधएं जल मरेगी व जिनकी सीढ़ियों के नीचे बाथरूम, शौचालय होगा वह किसी न किसी प्रकार जहर खाने को बाध्य होगी।

समाज का हर वर्ग गरीब–अमीर पढ़ा लिखा विद्वान व अनपढ़ हर कोई शादी के मामले में ज्योतिषियों के ऊपर बहुत ही अधिक निर्भर हैं। होना भी चाहिए क्योंकि विज्ञान अभी तक मानव सूक्ष्म भावनाओं को समझने में पूर्णतयाः सशक्त नहीं हुआ हैं। परन्तु इसमें भी एक बहुत बड़ी त्रुटि हैं कि ज्योतिषी महोदय जो पूर्ण विद्वता से पूर्ण तो हैं पर वर्तमान की सुधार ज्योतिष में नहीं ला पाये हैं।

मंगली होना व कालसर्प दोष इत्यादि को ही ज्योतिषी विद्वान विवाह विलम्ब व विवाह तनाव का आधार मान कर चल रहे हैं जबकि मांगलिक होने का अभिप्रायः दाम्पत्य सुखः में उग्रता, एनर्जी का द्योतक कहा जाना चाहिए। विवाह विलम्ब व विवाह में तनाव में अन्य ग्रहों के योग व दृष्टि सम्बन्ध पाये जाते हैं। जिनमें भगवान राम के काल से लेकर अभी तक विद्वान ज्योतिषी समुदाय ने दृष्टिपात या अनुसंधान ही नहीं किया हैं।

मांगलिक दोष या कुंजा दोष को लेकर समाज में नारी वर्ग का जितना अपमान व अनादर हुआ हैं वह अवसाद का विषय हैं। करोड़ों कन्याओं को मंगली दोष के अज्ञानता के कारण कभी प्रथकता तो कभी वैधव्य तो कभी अत्याचार कभी हत्या, कभी हिंसा जैसे भयावह दुष्परिणामों का भागीदार बनना पड़ा हैं। जन्मांक में मंगल दोष से भयभीत होकर जो अभिभावक अपने पुत्र अथवा पुत्री का नकली जनमांक मिलापक के निमीत्त प्रस्तुत करते हैं वे अपने परिवारों के साथ क्रुर एवं अक्षम्य अपराध करते हैं।

मिलान सारणी व मुहूर्त प्रणाली पर भी वर्तमान एवं भविष्य के संदर्भ में रखकर नये सिरे से अनुसंधान करना चाहिए। मकान , दुकान व विवाह का मुहूर्त काल स्थिर लगन में ही होना चाहिए जबकि चर व द्विस्वभाव लगन में भी शादी के मुहूर्त हो रहे हैं। इसके लिए समाज भी दोषी हैं जोकि विद्वान ज्योतिषी द्वारा सुझाए गये लग्न व मुहर्त नहीं मानकर भागड़ा इत्यादि में दुल्हा–दुल्हन को उलझाकर, शुभ लग्न को छोड़कर अशुभ लग्न में फेरे (पाणिग्रहण) हेतु बाध्य कर देते हैं।

वधु के माता–पिता एवं विवाह आयोजकों को चाहिए कि वे ज्योतिषी द्वार सुझाये गये मुहर्त एवं लग्न में ही विवाह की रस्म (सम्तपदी / फेरे / पाणिग्रहण संस्कार) पूर्ण कर ले अन्यथा विवाह मुहर्त निकलवाने का कोई महत्व नही रह जाता हैं क्योकि व्यवहारिक तौर पर देखा गया हैं कि विवाह में सम्मीलित सभी लोग अपने–अपने कार्यो में व्यस्त रहते हैं कोई शराब में मस्त रहता हैं तो कोई डांस में। कुछ लोग फोटो शैसन में तो कुछ लोग बातो में मंग्न रहते हैं इन सब बातों में नजरअंदाज करता हुआ शुभ विवाह मुहर्त आगे निकल जाता हैं क्योकिं समय गतिशील हैं फलतः अधिकांश विवाह मुहर्त में नहीं होते हैं जिसके कारण पारिवारिक कलह पति–पत्नि के सम्बन्धों में कटूता एवं तलाक आदि को पूरा समाज त्रासदी के रूप में झेलता हैं।

अगर किसी भी जातक जिसकी शादी हो रही हैं उन दोनो पति पत्नि में या किसी एक के जन्म लग्न में सूर्य पर शनि का व बुध या मंगल या बुध मंगल दोनो पर राहू का गोचर भ्रमण या दृष्टि संबंध बन रहा हो तो शादी नहीं करनी चाहिए जब तक यह गोचर दृष्टि संबंध समाप्त नहीं हो जाता। अन्यथा नवदम्पति का तलाक या आत्महत्या अथवा आग से जलने मरने की दुर्घटना हो सकती हैं। सुखी वैवाहिक जीवन के लिए कुल 36 गुणों में से कम से कम 18 गुणों का मिलान आवश्यक माना गया हैं। परन्तु विवाह से पूर्व पूर्ण रूप से पत्रिका मिलान के बाद भी विवाह में झगड़े, तलाक या आत्महत्या को नहीं रोका जा सकता हैं। कुछ पति पत्नि एक दूसरे

शेष पेज 20 पर...............

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 250/– वास्तु परामर्श शुल्क रु. 500/– (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतीय स्टेट बैंक खाते में 10039621088, आगरा शाखा में जमा

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा
फोन : 0562–2856666, 2525262, 9719005262
ई मेल : maheshparasar@anushthan.in

रोग और वास्तु

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता
मो. 9319221203

जो कुछ इस ब्रह्मांड में है वह सब कुछ हमारे शरीर में है। पंच तत्वों से निर्मित शरीर की ऊर्जा को सकारात्मक ऊर्जा से मेल करवाना वास्तु है। ऊर्जा के प्रमुख केन्द्र व चंद्र हैं। प्रत्येक व्यक्ति में पृथक–पृथक प्रवाहित होती है एवं इसी ऊर्जा की न्यूनाधिकता रोग को दर्शाती है। यदि हम थोड़ा सा परिवर्तन कर लें तो हम स्वस्थ रह सकते हैं।

पंच तत्वों अनुसार- पृथ्वी पर पांच तत्व अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल व आकाश तत्व विद्यमान है। इन तत्वों से संबंधित विषयों को इसी दिशा में रखें तो उचित होगा।

1. अग्नि तत्व- पूर्व व दक्षिण के मध्य का भाग अग्नि कोण कहलाता है। वहीं हमारे शरीर में भोजन को पचाने हेतु जठराग्नि कार्य करती है। अग्नि का संबंध तेज से होता है। मस्तिष्क में आवेग व क्रोध अग्नि का रुप है। अग्नि एक शक्ति है। यदि हम अग्नि प्रधान भौतिक चीजों जैसे–रसोई, गैस, हीटर, गीजर, चूल्हा, बिजली का सामान इसी दिशा में रखें तो अनुकूल होगा अन्यथा पेट में खराबी, तनाव व क्रोधवश कलह रोगी जो स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर देगी।

2. जल तत्व - पृथ्वी पर व शरीर में 2/3 जल तत्व है। इसके लिए ईशान दिशा पूर्व व उत्तर का भाग श्रेष्ठ मानते हैं। जल व रस से सभी प्रकार की शक्ति प्राप्त होती है। यदि पानी संग्रह का टैंक, बोरिंग, पानी की टंकी आदि गलत दिशा में हो तो परिणाम अशुभ ही मिलते हैं। यदि दक्षिण में जल है तो महिलाएं बीमार रहती हैं व नैर्ऋत्य में हैं तो अकाल मृत्यु या दुर्घटना भय रहता है। शरीर में रक्त विकार होता है।

3. पृथ्वी तत्व - पृथ्वी तत्व का संबंध पृथ्वी के ढलान से है। यदि गृह का ईशान पूर्व व उत्तर का भाग नीचा हो तो रोग सदैव आपसे दूर रहते हैं। गृह शांति कर्ज मुक्ति व धन लाभ हेतु घर में कमरों का ढलान ईशान की ओर रखें।

4. वायु तत्व - वायु तत्व का प्रमुख आधार मकान में प्रवेश करने वाली आयु से है अर्थात भवन के खिड़की दरवाजे यदि अग्नि कोण में हों तो अक्सर चिड़चिड़ापन व अवसाद के शिकार होंगे। यदि दक्षिण की तरफ खुलते हैं तो धन तो आएगा परन्तु अपने साथ रोग भी लाएगा।

5. आकाश तत्व - आकाश तत्व का आधार खुले स्थान में है। घर में खुला स्थान सदैव पूर्व की ओर रखें। यदि दक्षिण दिशा में खुला स्थान छोडा तो वह रोग को आमंत्रण देना है।

उक्त तत्वों का उत्तम स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष ख्याल रखें।

रोगी व शयन व्यवस्था–

–रोगी को कभी भी बीम के नीचे न सोने देवें। यदि स्वस्थ व्यक्ति

शेष पेज 20 पर..............

तिलक लगाने का प्रचलन क्यों?

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
फोन. 9412257617, 0562-2571618

धार्मिक शास्त्रों के अनुसार ललाट पर तिलक या टीका धारण करना एक आवश्यक कार्य है, क्योंकि यह हिंदू संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। कोई भी धार्मिक आयोजन या संस्कार बिना तिलक के पूर्ण नहीं माना जाता। जन्म से लेकर मृत्यु शय्या तक इसका प्रयोग किया जाता है। यों तो देवी–देवताओं, योगियों, संतों–महात्माओं के मस्तक पर हमेशा तिलक लगा मिलता है, लेकिन आम लोगों में धार्मिक आयोजनों, पूजा–पाठ, संस्कारों के अवसरों पर तिलक लगाने का प्रचलन आम है।

भारतीय परंपरा के अनुसार तिलक लगाना सम्मान का सूचक भी माना जाता है। अतिथियों को तिलक लगाकर विदा करते है, शुभ यात्रा पर जाते समय शुभकामनाएं प्रकट करने के लिए तिलक लगाने की प्रथा प्राचीनकाल से चली आ रही है।

स्नान, होम, देव और पितृकर्म करते समय यदि तिलक न लगा हो, तो यह सब कार्य निष्फल हो जाते हैं। ब्राह्मण को चाहिए कि वह तिलक धारण करने के बाद ही संध्या, तर्पण आदि संपन्न करे।

स्कंदपुराण में बताया गया है कि कौन–सी अंगुली से तिलक धारण करने से क्या–क्या फल मिलते हैं तथा अनामिका से तिलक करने से शांति, मध्यमा से आय, अंगूठे से स्वास्थ्य और तर्जनी से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इसके अलावा ब्राह्मण भोजन हेतु किया गया तिलक तीन अंगुली से पूरे ललाट पर, विष्णु की उपासना में ऊर्ध्व तिलक दो पतली रेखा में, शक्ति के उपासक (शिव शक्ति) स्वरुप दो बिंदी और महादेव के भक्त त्रिपुंड तीन रेखाओं का आड़ा तिलक लगाते हैं। शास्त्रों के मतानुसार श्राद्ध, यज्ञ, तप, देवपूजन में त्रिपुंड धारण करने वाले व्यक्ति मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं।

उल्लेखीय है कि हमारे मस्तिष्क (ललाट) से ही तिलक, टीका, बिंदिया का संबंध इसलिए जोड़ा गया है कि सारे शरीर का संचाल कार्य वही करता है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने शिवनेत्र की जगह को ही पूजनीय माना है। पवित्र विचारों का उदय मस्तिष्क पर बिन्दी लगाने से होता है। ललाट के मध्य मानव शरीर का वह बिंदू है, जिससे निरंतर चेतन अथवा अचेतन दोनों अवस्थाओं में विचारों का झरना प्रवाहित होता रहता॑। इसी को आज्ञाचक्र भी कहते हैं। प्रमस्तिष्क, मस्तिष्क का वह ऊपरी भाग है, जो मनुष्य को देवता अथवा राक्षस, प्रकांड विद्वान अथवा मूर्ख बनाने की शक्ति रखता है। हमारी दोनों भौंहों के बीच सुषुम्ना, इड़ा और पिंगला नाड़ियों के ज्ञान तंतुओं का केंद्र मस्तिष्क ही है, जो दिव्य नेत्र या तृतीय नेत्र के समान माना जाता है। इस पर तिलक लगाने से आज्ञा चक्र जाग्रत होकर व्यक्ति की शक्ति को ऊर्ध्वगामी बनाता है, जिससे उसका ओज और तेज बढ़ता है। शरीरशास्त्र की दृष्टि से यह स्थान पीयूष ग्रंथि (पीनियल ग्लैंड) का है, जहां अमृत का वास होता है। इसका स्राव सोमरस के तुल्य

शेष पेज 20 पर..............

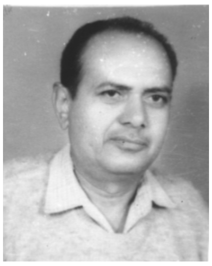

जातक का स्वभाव, क्षमता और माता-पिता का सुख बताता है द्वादशांश

आचार्य डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मयंक'
धात्री एस्ट्रोलॉजी कल ब्यूरो
श्री जगदम्बा कालोनी ठाकुर बाबा रोड़
डबरा– 475110 जिला ग्वालियर (म.प्र) मो.–99775–22168

फल कथन में व्यक्ति की जन्म कुंडली प्रमुख आधार है लेकिन जन्मांग के किसी भी भाव से सम्बन्धित फल कथन के लिये उस भाव की तथा भावेश की षड़वर्ग में स्थिति का आंकलन आवश्यक है। भावेश षड़वर्ग में जितना बली होगा उतना श्रेष्ठ प्रभाव उस भाव का मिलेगा। षड़वर्ग में जन्मांग या चंद्रकुंडली, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश चक्र आते हैं। षड़वर्ग में कोई ग्रह उच्च राशि, मूल त्रिकोण राशि, स्वराशि या मित्र राशि में हो तो वह ग्रह जातक को लाभदयक होता है। अधिकांश वर्गो में जो ग्रह बली हो व अपनी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यंतर्दशा आदि में शुभ एवं सुखप्रद परिणाम देता है। इसके विपरीत ग्रह स्थिति विपरीत परिणाम देती है। प्रस्तुत लेख में द्वादशांश पर विचार किया जा रहा है।

द्वादशांश:– जैसा कि नाम से स्पष्ट है द्वादशांश का अर्थ बारहवों भाग होता है अर्थात् एक राशि को 12 भागों में विभक्त करने पर एक द्वादशांश 2 अंश 30 कला का होता है। इस प्रकार क्रमशः 12 द्वादशांश हो जाते हैं। उदाहरणार्थ मेष राशि का प्रथम द्वादशांश मेष का ही होगा और 12वॉ मीन राशि का होगा।

द्वादशांश के स्वामी देवताओं के बारे में भी जानलें। ये हैं गणेश, अश्विनी कुमार, यम, अहि (सर्प)। प्रथम, पंचम, नवम द्वादशांश के अधिपति गणेश, 2, 6, 10 के स्वामी अश्विनीकुमार, 3, 7, 11 के स्वामी यम तथा 4, 8, 12 वें द्वादशांश के स्वामी अहि होते हैं।

द्वादशांश से विचारणीय:– षडवर्ग में इस वर्ग का उपयोग विशेषतः माता–पिता के संदर्भ में किया जाता है। उनकी उम्र, उनका धन, उनका मान सम्मान, समाज में स्थिति तथा जातक को माता पिता से प्राप्त सुख कैसा रहेगा आदि जानने के लिये द्वादशांश का उपयोग किया जाता है। इससे जातक की रुचि, स्वभाव, दोष, क्षमता आदि का भी ज्ञान किया जाता है। द्वादशांश कुंडली में लग्न, चतुर्थ, नवम, दशम भाव तथा भावेश शुभ युक्त तथा शुभ दृष्ट होगा और सूर्य एवं चंद्रमा की शुभ ग्रहों की राशि में होगा माता पिता दोनों ही प्रतिष्ठित होते है तथा जातक को उनका पूर्ण सुख मिलता है।

जन्म लग्न राशि के अंशों के आधार पर द्वादशांश की लग्न निर्धारित होती है। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस लग्न राशि का स्वामी द्वादशांश लग्नेश कहलायेगा। यदि यह ग्रह जातक की जन्म कुंडली में लग्न में ही हो तो जातक धन वैभव मान प्रतिष्ठा सम्मान आदि मे अपने पिता जैसा ही होता है।

जन्म लग्न के द्वादशांशेश (द्वादशांश लग्नेश) के अनुसार प्रभाव:–

1. द्वादशांश की लग्न सिंह हो तो व्यक्ति का आचरण ठीक नहीं होगा। मन में अस्थिरता तथा सदा उदासी युक्त रहेगा लालच एवं क्रोध की मात्रा अधिक होगी। धन सुख भी बाधा ग्रस्त रहेगा।

2. कर्क लग्न का द्वादशांश होने पर जातक सदाचारी, शीलवान, हुनरमंद विद्वान, सुंदर, आकर्षक, कुटुम्ब का हितैषी, धनी, नेतृत्व क्षमता वाला होता है।

3. द्वादशांश लग्न मेष या वृश्चिक होने पर जातक धूर्त स्वभाव का चुगली करने वाला, व्यसनी, बात–बात पर झगड़ने वाला, आचरणहीन नियम विरुद्व कार्य करने वाला, वासना युक्त तथा चर्म रोगी होता है।

4. यदि यह लग्न कन्या या मिथुन हो तो श्रेष्ठ मानी गई है। शुभ ग्रह बुध के कारण जातक न्याय प्रिय, विद्वान, आचरण वान, धर्म में आस्था से युक्त, भाग्यशाली, सबको सम्मान देने वाला तथा भौतिक सुख को महत्व देने वाला होता है।

5. यदि द्वादशांश लग्न धनु या मीन हो तो जातक अपने मित्र वर्ग का सहयोगी, पवित्र आचरण विद्वान, विभिन्न विषयों का ज्ञाता, श्रेष्ठ वक्ता ओज युक्त वाणी ललित कलाओं का प्रेमी धन से सुखी तथा दीर्घायु होता है।

6. यदि लग्न वृषभ या तुला हो तो शुक्र द्वादशांश लग्नेश होगा ऐसा जातक धन, वैभव विलासिता सुख से पूर्ण, वार्तालाप करने में कुशल गायन वादन में पूर्ण रुचि क्षमाशील तथा परोपकारी होता है।

7. यदि द्वादशांश लग्न मकर या कुंभ हो तो जातक धर्म परिवर्तन करने वाला, गंदा स्वभाव, कलह प्रिय, मलिन चरित्र सबकी बुराई करने वाला, दुखी तथा भाई बंधुओं से विरक्त होता है। यद्यपि धन धान्य एवं सेवकों से युक्त रहता है।

8. यदि द्वादशांशेश की स्थिति जन्म लग्न कुंडली में बलवान हो अर्थात द्वादशांश लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त या शुभ ग्रहो से दृष्ट हो तो व्यति माता–पिता, भाई–बंधु, मित्र आदि का पूर्ण सहयोग एवं प्रेम पाकर सुखी रहता हैं।

9. वहीं यदि द्वादशांश लग्नेश जन्म कुंडली में पाप प्रभाव में हो अर्थात वह नीच राखि स्थित हो, अस्त हो, पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो जातक को माता पिता के व्यवहार से दुखी रहना पड़ता है।

10. यदि द्वादशांश लग्नेश जन्म कुंडली में अपनी उच्चराशि, मित्र राशि या स्वराशि में स्थित हो तो जातक के माता–पिता सुखी एवं भाग्यशाली होते हैं। यदि जन्म कुंडली में द्वादशांश लग्नेश धन भाव में स्थित है तो जातक अपने जीवनमें धन एवं मान सम्मान में वृद्धि पाता रहता है।

11. द्वादशांश यदि जन्म कुंडली में लाभ भाव में स्थित हो तो जातक को गुप्त धन मिलने की संभावना होती है। यह धन पूर्वजों का होता है।

12. जो ग्रह द्वादशांश लग्न का स्वामी है यदि वह जन्म लग्न कुंडली में 6, 8, 12 वें भाव में गया हो तो जातक का जीवन संघर्ष पूर्ण रहता है। उसे अपने माता–पिता से विशेष सुख एवं लाभ नहीं

शेष पेज 22 पर..............

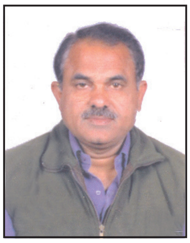

गो-मूत्रकी तुलनामें कोई महौषधि नहीं

डॉ. सतीश शर्मा
पशुधन प्रसार अधिकारी
पशुपालन विभाग उ. प्र.
मो. 9412254180

वर्तमान समयमें करोड़ों रुपयें दवाओं, डॉक्टरों और अस्पतालामें खर्च हो रहे हैं, फिर भी रोग और रोगियों की संख्या बराबर बढ़ रही है। मानव–समाज शारीरिक व्याधियों से ऊब गया है। बहुत से गरीब परिवार दवा और डॉक्टरों के पीछे अपना धन भी खो चुके हैं, परंतु शरीर से नीरोग नहीं हुए। गाँवों की गरीब जनता धनहीनताके कारण चिकित्सा कराने में असमर्थ है।

हमारा प्राचीन साहित्य गो–महिमा से भरा हुआ है। विज्ञान गोमूत्र और गोरब के गुणों को अब समझे लगा है। जबकि हमारे देशवासी इनका प्रयोग हजारों वर्ष से करते आ रहें हैं।

आयुर्वेद में अनेक रोगों पर गोमूत्र और गोबर के प्रयोग का उल्लेख है। धर्मग्रन्थों में गाय को कामधेनु कहा गया है तथा उसकी पाँचों चीजें–दूध, दही, घृत, मूत्र और गोबर को बहुत पवित्र और गुणकारी बताया गया है।

गोमूत्र सर्वरोग–नाशक होने के कारण इसके सेवन काल में शरीर का रोग ढीला होकर, आँतों (मल–मार्गों) से निकलने लगता है। इसलिये आवश्यक परहेज के साथ चिकित्सा चलाने पर किसी एक रोग का नहीं, बल्कि सारे शरीर का इलाज हो जाता है। इसकी विधि अत्यन्त सरल एवं शीघ्र लाभ पहुँचानेवाली है।

आयुर्वेद के प्राचीन आचार्यो ने गोमूत्र और गोबर का उपयोग औषधि के रुप में किया था और इसे बहुत लाभदायक पाया था। शरीर की रक्षा के लिये आवश्यक क्षार–लवणादि की कमी से होने वाले जितने भी रोग है। गोमूत्र के सेवन से दूर हो जाते हैं।

सभी प्रकार के मूत्रों में गोमूत्र ही अधिक गुणयुक्त माना गया है। गोमूत्र के प्रयोग से सूचन शीघ्र ही नष्ट होती है।

कुष्ठ–निवारण के लिये गोमूत्र परम औषध है। गोमूत्र पीने पर उदर के सभी रोग नष्ट होते हैं यकृत् और प्लीहा के बढ़ने पर गोमूत्र पीने और सेंकने से लाभ होता है। ओकोदशालिका (स्नान–गृह) में चालानी के नीचे बालक को बैठाकर चालनी के छिद्रों से गोमूत्र डालकर तथा मिट्टी और राखद्वारा रगड़कर स्नान कराने से बालक के चर्मरोग आदि नष्ट हो जाते हैं। गोमूत्र के साथ पुराना गुड़ और हल्दी–चूर्ण पीने से श्लीपद् (हाथी–पाँच) दाद और कुष्ट आदि नष्ट होते हैं। एक मास तक गोमूत्र के साथ एरंड–तेल पीने पर सन्धि–पीड़ा और बातव्याधि नष्ट होती है।

गाय के मूत्र में कारबोलिक एसिड होने से उसकी स्वच्छता और पवित्रता बढ़ जाती है। वैज्ञानिक रीति से गोमूत्र में फॉसफेट, पोटाश, लवण, नाइट्रोजन, यूरिया, यूरिक–एसिड होते हैं, जिन महीनों में गाय दूध देती है, उसके मूत्र में लेक्टोज विद्यमान रहता है, जो हृदय और मस्तिष्क के रोगों में बहुत लाभदायक होता है। आठ मास की गर्भवती गाय के मूत्र में पाचक रस (हार्मोन्स) अधिक होते हैं।

गाय का दूध 2 तोला, गाय का मूत्र 5 तोला, गायका दही सवा तोला, गाय का घी 10 माशा, गाय के गोबर का रस ढाई तोला और शहद 4 माशा–रस कर लें। स्त्रान करके सूर्योदय के समय सूर्य की ओर मुँह करके इसे पीना चाहिये। दो–तीन महीने तक यह क्रम चलाया जा सकता है। इससे अनेकों रोग नष्ट होते हैं।

अमेरिका के डॉ. क्राफोड हेमल्टिन तथा मेकिन्तोशने बहुत पहिले ही यह सिद्ध कर दिया था कि गोमूत्र के प्रयोग से हृदय–रोग दूर होता है और मूत्र खुलकर आता हैं।

शेष अगले क्रमांक में........ ❊❊❊

सूर्यनमस्कार ॐ प्रणामासन

योगाचार्य प्रभुदयाल गुप्ता
Ph: 0562-2410609, 9412724151

1. तृतीय स्थितिः– पाद हस्तासनः– ओउम् सूर्याय नमः मंत्र का उच्चारण करते हुये दोनों घुटों को सीधे रखें और श्वास छोड़ते (रेचक क्रिया करते) हुये दोनों हाथों को दोनों मंजो के बाराबर दोनों हथेलियों व उंगलियों से आसन का स्पर्श करें, नासिका से दोनों घुटनों का स्पर्श करने की कोशिश करें, (हठ धर्मी न करें जितना हो सके कमर को धीरे–धीरे झुकायें अन्यथा कमर में पीड़ा हो सकती है।

जब तक इस स्थिति में आसानी से रुक सकते हैं रुके रहे और थकने पर श्वांस भरते हुए (पूरक क्रिया करते हुये) अगली मुद्रा या आसन में जायें। इस आसन से कमर के रोगों का निवारण, मोटापे पर नियंत्रण, हृदय व फेफड़े (Longs) पुष्ट होते हैं, शुद्ध रक्त का संचार होता है तथा उत्साह में बृद्धि होती हैं।

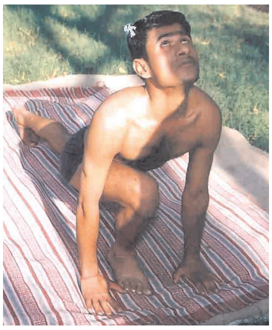

2. चतुर्थ स्थितिः अश्व संचालासनः ओउम् भानवे नमः मंत्र का उच्चारण करते हुऐ दाहिने पैर को पीछे ले जायें और बायें पर जोरदेकर अवश्य संचालन स्थिति में रुकें, दाहिना पंजा एवं घुटना आसन से लगा रहे (दूसरी स्थिति में पैर को सीधा रखकर केवल पंजा ही आसन से लगा सकते हैं पैर को दोनों स्थिति में सीने के नीचे रखते हैं) दोनों हथेलियां और बाया पैर यथा स्थान रखे रहें, कोहनियाँ तनी सीधी रखते हुए सिर को ऊपर की ओर (आकश की ओर) रहे और गहरा श्वांस भरें (पूरक करें), कन्धे और गर्दन पीछे की ओर ले जायें बाई पिंडली व जांघ सीने से लगी रहे। इस प्रकार इस आसन से पिंडलियाँ पुष्ट होती हैं, बाजू पुष्ट होते हैं और गर्दन की पीढ़ा दूर होती है। ❊❊❊

रेकी जीने की शक्ति

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्य
टैरो कार्ड रीडर, मो. 9319305530

सारी ज्योतियां परमात्मा से ही है। इस संसार में जितनी भी ज्योतियां हैं, ईश्वर उन ज्योतियों की भी ज्योति हैं। यह सब भगवान ही हैं। इनकी चमत्कार दृष्टि ही परमात्मा है। इसी ज्योति, इसी प्रकाश को रेकी विद्या कहते है।

रेकी के कई प्रकार है, जिनमें दैवीय व आध्यात्मिक प्रमुख हैं। रेकी का मतलब स्वस्थ मन, स्वस्थ शरीर, स्वस्थ जीवन हैं। रेकी जापानी भाषा का शब्द हैं।

रेकी वास्तव में आत्मविश्वास बढानें की, तनाव रहित जीवन जीनें की शक्ति है। रेकी शक्ति को सीखकर कोई भी व्यक्ति स्वयं को अथवा किसी अन्य को अपने हाथों के स्पर्श से शक्ति, शांति व नव जीवन प्रदान कर सकता है। ईश्वर में ध्यान लगाइये, वही दैवीय प्रेम का अनंत साधन हैं। एक बार आप रेकी पर सिद्धि पा लें, फिर यह जीवन पर्यंत आपके साथ रहेगी। आपके हाथों से रेकी का निरंतर प्रवाह होता रहेगा, रोगी को हाथ का स्पर्श दें, रेकी प्रवाहित होने लगेगी। जीवन शक्तियां कभी गलत नही होती, ये तो असंतुलित करती हैं। रेकी आसान है, यह प्राकृतिक रूप से कार्य करती है। रोगी के सम्पर्क से न तो आप किसी प्रकार का असंतुलन अनुभव करते है और न ही किसी रोग से ग्रस्त हो सकते है। रेकी शक्ति के रूप में आपके माध्यम से रोगी के शरीर में पहुँचती हैं। इसलिए आपको रोगी से किसी भी प्रकार के रोग का संक्रमण नही होता। सदा रोगी की इच्छा के अनुरूप ही उपचार करें। एक बार आप लय पा लें, फिर रेकी को रोक पाना कदापि संभव नहीं। यह उपचार प्रेम की अभिव्यक्ति हैं। डाउजिंग एस्ट्रोलॉजी को भी रेकी सीखकर और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता हैं। वास्तव में रेकी वह शक्ति है, जिसमें अपनी मंत्र शक्ति, पूजा साधना को और प्रभावशाली बनाया जाता है।

रेकी भले ही जापानी भाषा का शब्द है, परन्तु यह हमारे देश के माध्यम से जुडता हैं। रेकी को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए रत्न, रूद्राक्ष और क्रिस्टल का प्रयोग भी किया जाता है। ❋ ❋ ❋

786 अंक हिन्दूओं के लिए भी शुभ है

सुरेश अग्रवाल
मो. 9897137268

आमतौर पर 786 अंक को मुस्लिम बंधुओं के लिए परम शुभ माना जाता है। परन्तु यह अंक हिन्दूओं के लिए भी उतना ही कल्याण कारी है। 786 का दोनों ही समुदायों से गहरा सम्बध है।

जब ईश्वर हो या अल्लाह–वे हवा, पानी और प्रकाश में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते, तो 786 के अंक के साथ वे भेदभाव क्यों करेंगे? 786 और श्री कृष्ण एक दूसरे के पूरक हैं, 7 छिद्रों और स्वरों वाली बाँसुरी को, देवकी के आँठवें पुत्र में अपने दोनों हाथों की 6 अँगुलियों से बजाकर सारे संसार को मंत्र मुग्ध कर दिया था।

786 का अंक 7 शरीर में स्थित सात धातुओं यानी रक्त, पित्त, माँस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र का प्रतीक है। संगति के सात स्वर और सूर्य की किरणों में सात रंग होते हैं। अंक 8 माया का स्वरुप है और पुरुषो में 8 गुण पाये जाते है

"दया, सर्वभूतेषु क्षरंति, अनसूया, शौच,
अनायासः, मंगलम्, अर्कायण्यम् अस्पृह।"

एक दिन और रात के आठ प्रहर होते हैं। अंक 6 वनस्पति के लिए प्रयोग में लाया जाता है। प्राणी सैदव काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और नत्सर– इन 6 में ही लिप्त रहता है वर्ष में ऋतुएँ भी 6 होती है–बसन्त ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त तथा शिशिर।

नायाब काजी सैयद मुस्ताक अली का कथन है कि 'विस्तिल्लाह' पदने अथवा कहने पर इसकी अक्षर संख्या के आधार पर कुछ लोगों ने 786 अंक की कल्पना कर ली थी, लेकिन इसका कोई मजहबी महत्व नहीं हैं मौलाना शरफत अली के अनुसार 786 अंक का अरब में भी कोई महत्व नहीं है। यह ईसन के कुछ लोगों की उत्पत्ति है, जो किन्ही कारणों से प्रसार प्रचार के कारण व्यवहार में आ गया है। ❋ ❋ ❋

वास्तुदोष, आर्थिक, व्यापारिक, मानसिक, शारीरिक, शिक्षा, दुर्घटना, जायदाद, वैवाहिक, घरेलू समस्याओं का यंत्र/मंत्र/रत्न द्वारा समाधान हेतु मिलें

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

डॉ. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा   फोन : 0562–2856666, 2525262

मासिक राशिफल

16 अप्रैल - 15 मई

मेष (Aries)– चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस मास में धन लांभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय ठीक रहेगा। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी।

वृष (Taures)– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में गुप्त शत्रु से बचें। स्वास्थ्य खराब रहेगा। कार्य में निरन्तर हानि होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में कारोबार ठीक हो जायेगा।

मिथुन (Gemini)– क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– सन्तान पक्ष से चिन्ता लगी रहेगी। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। अपमान होने का भय रहेगा।

कर्क (Cancer)– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में हानि होने का भय रहेगा। प्रियजनों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में स्वास्थ्य खराब रहेगा। अच्छे लोगों से मेल-जोल बढ़ेंगे

सिंह (Leo)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सम्पत्ति का लाभ होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से मन-मुटाव होने की स्थिति बनेगी। योजनाओं से लाभ होगा।

कन्या (Virgo)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में लाभ होकर हानि का भय रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे। सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी।

तुला (Libra)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल होंगे। व्यवसाय मास के अन्त में ठीक हो जायेगा। पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

वृश्चिक (Scorpio)– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– प्रियजनों का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। मास में शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। नई योजनायें बनाने में सक्षम रहेंगे। आय से अधिक खर्च होंगे।

धनु (Sagittarius)– ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– शत्रु प्रबल रहेंगे। पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। मास का अन्त शुभ रहेगा।

मकर (Capricorn)– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– प्रियजनों का पूर्ण सूख प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी लगी रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (Aquarius)– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। मानसिक तनाव से बचें। प्रियजन को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मित्रों से मेल सूत्र जुड़ेगा।

मीन (Pisces)– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची– पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आय से ज्यादा खर्चे रहेंगे। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अप्रैल	मई
17 पूर्णिमा व्रत	1 विश्व मजदूर दिवस,
18 पूर्णिमा, हनुमान जयंती	3 अमावस्या (स्नान/दान),
21 श्री गणेश चतुर्थी व्रत	6 श्री परशुराम जयंती (अक्षय तीज), श्री विनायक चौथ,
22 गुरु तेजबहादुर जयंती,	7 रविन्द्र नाथ टैगोर जयंती,
24 गुरु अर्जुन देव जं	8 श्री आद्य शंकराचार्य जयंती,
25 कालाष्टमी(सीताष्टमी)	9 श्री रामानुजाचार्य जयंती,
28 वरुथिनी एकादशी व्रत,	11 दुर्गाष्टमी (श्री बगलामुखी जं),
30 प्रदोष व्रत	12 सीता नवमी, 13 मोहिनी एकादशी,
	15 प्रदोष व्रत, श्री नरसिंह जयंती

ग्रहारम्भ मुहूर्त
मई – 6, 13, 14

गृह प्रवेश मुहूर्त
अप्रैल – 27, 28
मई – 5, 6, 9,13, 14

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
अप्रैल – 16, 18,
मई – 6, 13, 14, 15

नामकरण संस्कार मुहूर्त
अप्रैल – 18, 27, 28
मई – 1, 6, 15

सर्वार्थ सिद्ध योग

अप्रैल	मई
17 ता. सू.उ. से 15:48 तक	04 ता. सू.उ. से 30:27 तक
20 ता. 7:55 से सू.उ. तक	09 ता. 10:19 से सू.उ. तक
21 ता. सू.उ. से 30:16 तक	10 ता.10:03 से सू.उ. तक
24 ता. 5:47 से सू.उ. तक	
25 ता. 7:13 से सू.उ. तक	

मासिक राशिफल

16 मई - 15 जून

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। कारोबार में रुकावटें आयेंगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– निजीजन से अनबन होने की संभावना रहेगी। शत्रु का भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। अपमान होने का भय रहेगा। शत्रु कमजोर रहेंगे। गुप्त शत्रु से बचें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में वायु विकार होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होकर हानि होने का भय रहेगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। मास का अन्त कष्ट प्रद रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि से लाभ होगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यवसाय मध्यम रहेगा। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास से स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। नेत्र रोग का भय रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। धन हानि होने की संभावना रहेगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में कुछ परेशानियां उत्पन्न होंगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आर्थिक परेशानियों लगी रहेंगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख मिलेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। इस माह में स्थान परिर्वतन होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आर्थिक परेशानियों लगी रहेंगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। नई योजनायें बनायेंगे।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - इस माह में उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। कारोबार ठीक रहेगा। मास के अन्त में शुभ रहेगा। कारोबार ठीक रहेगा। खर्चे अधिक होंगे। शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मई

16 पूर्णिमा व्रत
17 बुद्ध पूर्णिमा
18 श्री नारद जयंती
20 श्री गणेश चतुर्थी व्रत
21 राजीव गांधी पुण्य तिथि,
25 शीतलाष्टमी पूजन
27 पं. नेहरू पुण्य दिवस
28 अचला (अपरा) एकादशी व्रत, **30** प्रदोष व्रत

जून

1 अमावस्या,वट सावित्री व्रत पूजन
4 रम्भा तीज व्रत
5 श्री गणेश चतुर्थी व्रत
7 स्कन्द षष्ठी **8** भानु सप्तमी
9 दुर्गाष्टमी (धूमावती जं)
10 माहेश्वरी नवमी, **11** गंगा दशहरा,
12 निर्जला एकादशी व्रत
13 प्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी
15 पूर्णिमा, वट सावित्राी व्रत, संत कवीर दास जं.

ग्रहारम्भ मुहूर्त
जून – 3

गृह प्रवेश मुहूर्त
मई – 18, 21, 23, 27, 28
जून – 2, 3, 6, 9, 11

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
मई – 18
जून – 3, 6, 9, 11, 12

नामकरण संस्कार मुहूर्त
मई – 27, 30
जून – 12

सर्वार्थ सिद्ध योग

मई	जून
18 ता. सू.उ से 16:40 तक	01 ता. सू.उ. से सू.उ. तक
22 ता. सू.उ. से 15:36 तक	06 ता. सू.उ. से 15:26 तक
23 ता. सू.उ. से 17:07 तक	07 ता. सू.उ. से 14:42 तक
31 ता. 11:22 से सू.उ. तक	

कुसंगति

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा

मो. 9412263505

एक बार की बात है उज्जयिनी नगर के मार्ग में एक पीपल का पेड़ था। उस पर हंस और कौआ एक साथ रहते थे। उस पेड़ के नीचे गर्मी के सताए पैदल चलने वाले विश्राम किया करते थे। एक दिन गर्मी से व्याकुल एक पथिक चलकर थक गया और उस पेड़ के नीचे धनुष–बाण रखकर विश्राम करने लगा। उसे नींद आ गई और वह सो गया। अचाक निद्रा में उसका मुख खुल गया। धीरे–धीरे पेड़ की छाया का रुख बदल जाने से सूर्य की तृप्त रश्मियां उसके मुख पर पड़े लगीं। पथिक की इस दशा पर हंस को दया आ गयी। हंस पंख फैलाकर पेड़ की उस शाखा पर बैठ गया जिसके कारण सूर्य–रश्मियां पथिक के मुख पर न पड़ें।

किन्तु कौआ दुष्ट स्वभाव का था। उसे हंस का ऐसा करना अच्छा नहीं लगा। उसने पथिक के खुले मुख में बीट कर दी और फिर उड़ गया, किन्तु हंस अपने स्थान से नहीं उड़ा। वहीं डाल पर बैठा रहा।

कौवें की इस कुकृत्य से शिकारी की नींद टूट गयी।

हंस अपने स्थान पर बैठा हुआ सोच रहा था–मैं क्यों उडूँ, मैं तो शिकारी को छाया देकर उपकार किया है। वह मेरा अनिष्ट क्यों करने लगा?"

हंस इस प्रकार ही सोच रहा था। कि शिकारी ने मुख ऊपर उठाकर देखा। हंस को ठीक अपने मुख पर बैठा देखकर उसने उसको ही अपराधी जाना। क्रोध में आकर शिकारी ने हंस को एक ही तीर मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया।

कथा सुनकर तोता बोला, "महाराज! इसीलिए मैं कहता हूं कुसंगति नहीं करनी चाहिए। अब कौए और बटेर की कहानी भी कहता हूं उसे भी सुनिए–"

करे कोई भरे कोई

"दुष्ट के साथ कभी नहीं रहना चाहिए।"

बहुत समय पहले की बात है एक पेड़ पर कौआ और बटेर सुख से आनन्द–पूर्वक निवास करते थे। एक बार सभी पक्षी घूमते–घूमते भगवान गरुड के दर्शन के लिए समुद्र तट पर चले गये। बत्तख भी अपने साथी कौए के साथ चल रही पड़ी। चलते–चलते रास्ते में कौए ने देखा कि ग्वालिन अपने सिर पर दही की हांडी रखे हुए चली जा रही थी। उसे देखते ही कौआ तेजी के साथ उड़ चला भोली बटेर भी उसका साथ निभाने के लिए उसके साथ पीछे–पीछे तेजी से उड़ने लगी। ग्वालिन के पास पहुंचकर कौआ उसकी हांडी पर बैठ गया और बार–बार दही खाने लगा। बटेर भी हांडी पर बैठ गई, पर उसने कौए की तरह दही चुराकर खाना उचित नहीं समझा। थोड़ी देर बाद ग्वालिन का घर आ गया। उसने हंडिया नीचे उतारी। कौए और बटेर को उड़ाने के लिय उसे हाथ ऊपर उठाया। कौआ तो झटपट उड़ गया, लेकिन बटेर अपने को निर्दोष समझकर धीरे से उड़ी। ग्वालिन ने उसे झपट्टा मारकर पकड़ लिया और फिर मार डाला।

कथा सुनाकर तोता बोला, "इसीलिए मैं कहता हूं कि दुष्ट के साथ न तो बैठना चाहिए और न ही उसके साथ कहीं जाना चाहिए।"

तोते की बात सुनकर मैंने कहा, "ऐसा क्यों कहते हों? मेरे लिए तो जैसे महाराज हैं, वैसे ही तुम हो।"

"ऐसा ही ठीक है। दुष्टों के कहे हुए वचन चाहे कितने ही अच्छे और मधुर हों, वे बेमौसम के मनुष्यों के समान भय ही उत्पन्न करते हैं। तेरी दुष्टता तो इसी बात से पता चल जाती है। इन राजाओं में होने वाले युद्ध के पीछे तेरी बातें ही मूल कारण हैं। मूर्ख सामने किए हुए दोष को देखकर भी दुष्ट के मीठे वचन सुनकर प्रसन्न हो जाता है। जैसे एक बढ़ई ने स्त्री के मीठे वचनों को सुनकर उसे और उसके यार के कन्धे पर उठा लिया था।" तोते ने कहा।

तोते की बात सुनकर राजा बोला, "वह कैसे?"

"सुनिए, महाराज! मैं कथा सुनाता हूं–"

शेष अगले क्रमांक में.................................

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 250/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 500/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतीय स्टेट बैंक खाते में 10039621088, आगरा शाखा में जमा

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा
फोन : 0562–2856666, 2525262, 9719005262
ई मेल : maheshparasar@anushthan.in

शेष पेज 6 से आगे...............

रोग, पेट संबंधित रोग, पथरी, अल्सर आदि का भय आयु विशेष में होता है। दीर्घजीवी या निरन्तर कोई न कोई बिमारी आने से जातक का स्वभाव चिडचिड़ा हो जाता है। कभी–कभी ऐसे जातक को पैतृक सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ सकता है। जातक के पिता को भी कष्ट रहता है। जिस जातक के मस्तिष्क रेखा पर काला तिल हो ऐसे जातक को मस्तिष्क संबंधी रोग हो सकता है। आयु विशेष में सिर पर चोट लगती है अथवा मस्तिष्क संबंधित कोई आपरेशन होता है। ऐसे जातक की याद्दाश्त बहुत कमजोर होती है। मिर्गी अथवा पागलपन के दौरे पड़ सकते है।

जिस जातक की हृदय रेखा पर काला तिल हो ऐसा जातक कमजोर हृदय का स्वामी होता है। उसको हार्ट–अटैक की संभावना अधिक रहती है। इस रेखा का संबंध दिल व मानव के मन से होता है। अतः उसके दिल को छोटी से छोटी बात से ठेस लग सकती है अर्थात् वह बहुत ही भावुक स्वभाव का होता है। जिस जातक की भाग्यरेखा पर काला तिल हो ऐसे जातक को उस आयुविशेष में धन सम्बन्धी हानि उठानी पड़ती है। उसके बने बनाये काम बिगड़ते हैं। ऐसा जातक दुर्भाग्यशाली होता है। लेकिन उसे माता से लाभ मिलता है।

जिस जातक की सूर्य रेखा पर काला तिल हो उस जातक की बदनामी होती है। उसकी प्रगति में बाधायें आती है। आजीविका में विशेष परेशानी आती है। राज्यपक्ष से नुकसान हो सकता है। परिवार व समाज में इज्जत नहीं होती।

जिस जातक की यात्रा रेखा पर काला तिल हो उस जातक को यात्रा में हानि होती है। जिस जातक की संतान रेखा पर काला तिल हो उस जातक को संतान उत्पत्ति में बाधायें आती हैं अथवा कन्यायें अधिक होती हैं। जिस जातक की विवाह रेखा पर काला तिल हो वह जातक के विवाह में अड़चनें डालता है अथवा वैवाहिक जीवन में परस्पर वैचारिक मतभेद होते हैं व कभी कभी तलाक की नौबत भी आ जाती है। जिस जातक की चन्द्ररेखा (प्रतिभा रेखा) पर काला तिल हो ऐसे जातक को अपमान, बुराई का मुंह देखना पड़ता है। उसकी माता को भी कष्ट का भय रहता है। नेत्र सम्बंधी रोगों से पीड़ा हो सकती है।

जिस स्त्री के माथे पर काला तिल हो उसको धनवान ससुराल मिलता है। उसका स्वभाव सरल होता है तथा धार्मिक कार्यो में रुचि होती है। राजरानी के समान जीवन बिताती है।

जिस स्त्री के ऊपरी होंठ पर तिल हो वह शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करती है। अच्दी वक्ता, शिक्षिका हो सकती है। ऐसी स्त्री का विवाह किसी उच्चपदाधिकारी के साथ होता है। स्त्री के हृदय पर तिल होना शुभ रहता है। स्त्री के नाभि के नीचे तिल का चिन्ह शुभ रहता है। यदि स्त्री बायीं और मस्तिष्क पर तिल हो तो सुख और ऐश्वर्य समृद्धि, बायी ओर ललाट पर हो तो सप्पत्तिवान, बायीं आँख के पास तिल हो तो शीलयुक्त, ठोड़ी पर तिल हो तो लजीली एवं गर्दन पर तिल हो तो अधिकारी प्रिय होती है।

जिस जातक के गले पर तिल हो वह जातक दीर्घायु सम्पन्न एवं घर में हुकूमत चलाने वाला होता है। जिस जातक के जंघा पर तिल हो वह जातक नौकर–चाकर व अच्छे वाहनों का स्वामी बनता है। जिस जातक के पांव पर तिल हो वह विदेश यात्रा कर आर्थिक लाभ प्राप्त करता है। ❋❋❋

शेष पेज 7 से आगे...............

सकता है परन्तु ध्यान रहे कि किसी भी देवी देवता का द्वार पर चित्र या मूर्ति लगाने पर उनका पूजन भी अनिवार्य है उन्हें नियमित रुप से धूप दीच दिखाना अनिवार्य होता है।

14. मुख्य द्वार पर प्रातः उठेत ही झाडू लगाकर पानी छिड़कना चाहिये ताकि रात्रि में छुपी हुई सारी नारात्मक शक्तियां समाप्त हो सके व सकारात्मक शक्तियां घर मं आ सकें एवं घर में धन आगम, अच्छा स्वास्थ्य व सुविचार प्रवेश पा सकें।

15. मुख्य द्वार पर रोजाा थोड़ा गंगाजल अवश्य छिड़कना चाहिये तथा धूपबत्ती या अगरबत्ती जलायें।

16. घर को बुरी नजर से बचाने के लिये द्वार पर नजर पोटली बनवाकर तथा अभिमन्त्रित कर के टांगननी चाहिये।

17. घर में किसी व्यक्ति की कुदृष्टि न पड़े व सभी लोग सुखी व सम्मान जीवन का यापन करें इसके लिये द्वार पर चौसठा या महायन्त्रम् का प्रयोग करें। इस यन्त्र की शक्ति से बाहर से आने वाली आवोहवा बाहर की रुक कर समाप्त हो जाती है। परन्तु ध्यान से इन यन्त्रों को धूप बत्ती दिखायें।

18. मुख्य द्वार पर रोशनी पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिये व सन्ध्या के समय गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हुये उसे खोलना चाहिये तथा रात्रि को जली छोडनी चाहिये।

19. मुख्य द्वार पर घर की संख्या व अपनी नेम प्लेट स्पष्ट शब्दों व अक्षरों में साफ लिखी हुयी होनी चाहिये।

20. घर का नाम अवश्य रखें व उसे लिखकर मुख्यद्वार पर लटकाना चाहिये। क्योंकि प्रत्येक घर की अपनी एक अगल पहचान होती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार घर एक सजीव वस्तु है तथा उसका नाम उस घर में रहने वाले लोगों का परिचायक होता है।

21. घर का नाम, भवन संख्या इत्यादि कां अंक शास्त्र से भली भांति ठीक कराकर ही प्रयोग करें क्योंकि शुभ अंको का प्रभाव, हमारे घर के द्वार पर पड़ने का अर्थ है कि वह अंक सीधा हमारे जीवन पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहें हैं।

अन्त में आप सभी से यही कहना चाहूंगी कि इन छोटे छोटे सूत्रों को ध्यान में रखकर आप ढेरों लाभ उठा सकते हैं बस देर आपके इन सूत्रों को मानने भर की है। ❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे...............

लाभ देता है। चतुर्थ में मित्र धन की हानि। पंचम में पुत्र बधन की हानि व कलह। षष्ट में शत्रु का नाश, निरोग, सुन्दर स्त्री प्रदान करता है। सप्तम व अष्टम में स्त्री व पुत्र से हीन व दीन। नवम् में श्रेष्टा से युक्त हृदय रोग दशम् में कर्म का लाभ धन व विद्या का नाश एकादश में कठोर स्वभाव दूसरे के धन का लाभ द्वादश में शोक व कलह की प्राप्ति।

विशेष– सूर्य मंगल की राशि के पूर्वाध में चन्द्र और शनि राशि के अन्त मं शुभाशुभ फल देते है। बुध राशि के प्रारम्भ व अन्त में फल देता है। शुक्र और गुरु राशि के मध्य में शुभाशुभ फल देते है।

इसके अतिरिक्त नीच राशिगत शुभ राशिगत, अस्त तथा शत्रु ग्रह से दृष्ट ग्रह के जो फल कहे गये है। वे सब निष्फल होते है। अर्थात अशुभ फल की वृद्धि करते है। ❋❋❋

शेष पेज 11 से आगे...............

के साथ रहते अवश्य हैं किन्तु मन नहीं मिलता।

कई लोग सिर्फ अच्छे परिवार में विवाह के लिए अथवा कोई एक मांगलिक होने के कारण नकली जन्म पत्रिका मिलवाकर विवाह कर देते है अथवा सिर्फ नाम से ही विवाह कर दिया जाता हैं। कई बार ज्योतिष वर्ग भी दक्षिणा के आधार पर सिर्फ पॉच मिनट में ही जन्म पत्रिका का मिलान कर देते हैं जबकि मेलापक वास्तव में ऐसा विषय नहीं है जो सिर्फ पॉच मिनट में ही पूर्ण विवाह मिलान कर दिया जावे। वे मंगल की स्थिति भी नहीं देखते हैं कि मंगल किस राशि व किस भाव में हैं क्योकि मंगल के उपरोक्त स्थान में होने मात्र से जातक मंगली नहीं हो जाता। कई ज्योतिषी तो ऐसे भी होते हैं जो प्रथम, चतुर्थ , सप्तम , अष्ठम व द्वादश भाव में मंगल के होने मात्र से ही मंगली का हौला बैठा देते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने मेलापक सिर्फ इसलिए बनाया कि विवाह से पूर्व दो जीवन के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सके। उनके विवाहित जीवन में किसी प्रकार की समस्या न आये और दोनो ही अपना जीवन सुखी, सौहार्दपूर्ण व सफल रूप से जीवन यापन कर सके। मांगलिक दोष के भ्रामक तथ्यों एवं विघटनकारी तत्वों का सम्यक विशलेशण यहां पूर्णतः सम्भव नहीं हैं।

दाम्पत्य कलह के कारण व ज्योतिष

दाम्पत्य कलह के पीछे कभी भी एक कारण जिम्मेदार नहीं होता हैं क्योकिं किसी कारण विशेष का किसी भी प्रकार से निदान किया जा सकता हैं। कलह के पीछे अनेक कारण अपनी भूमिका अदा करते हैं। जिनमें से यदि कुछ का समाधान नहीं होता हैं तो स्थिति बिगढ जाती हैं वे कारण निम्न हो सकते हैं :–

1. पति पत्नि में वैचारिक मतभेद होना।
2. पति पत्नि में अहम्, शंका व महत्वांकांक्षा होना अथवा एक–दूसरे के प्रति अविश्वास।
3. काम कला में न्यूनाधिकता होना।
4. आर्थिक संकट होना एवं भाग्यहिनता।
5. पति या पत्नि में से किसी एक का रोगी होना।
6. पति या पत्नि में से किसी एक में हिन भावना का होना या विचार मेल न खाना एवं पारिवारिक कलह।
7. गुण मिलान, शिक्षा, व संतान न होना आदि किसी एक में चारित्रिक दोष का होना।
8. एक दूसरे को समय न दे पाना। पति अथवा पत्नि का किसी भी कारण से विदेश प्रवास।
9. किसी एक के परिवार के अन्य सदस्यों का हस्तक्षेप।

जन्म पत्रिका में सुखी वैवाहिक जीवन की भूमिका

1. लग्न व उसका स्वामी अथवा लग्नेश।
2. राशि तथा राशि का स्वामी।
3. षष्ठम भाव तथा उसका स्वामी अर्थात षष्ठेश।
4. सप्तम भाव तथा उसका स्वामी अर्थात सप्तमेश।
5. मंगल, शुक्र तथा गुरू की स्थिति (विशेषकर स्त्री के लिए)
6. द्वितीय, चतुर्थ, पंचम अष्ठम व द्वादश भाव तथा इनके स्वामी।
7. नाड़ी दोष, राशि दोष ,षडाष्टकम्योग

इस प्रकार हम देखते है कि वर्तमान में बढ रहे तलाक के लिए केवल अभिभावक ही जिम्मेदार नहीं हैं इसमें समाज व ज्योतिषीयो का भी महत्वपूर्ण योगदान होता हैं।

शेष पेज 12 से आगे..............

भी बीम के नीचे सोता है तो उसकी ऊर्जा व पृथ्वी की चुम्बकीय ऊर्जा का सामंजस्य नहीं होता। वह मानसिक अवसाद, बवासीर, गुर्दा, पेट या सर के रोग से ग्रसित होता है।

–रोगी को ईशान दिशा वाले कमरे में शयन करना चाहिए व खाने वाली दवा उत्तर दिशा में 90 अंश के कोण में रखें।

–पेट के रोग या आलस्य है तो ताम्र पात्र में जल भरकर दक्षिण में रखें व सेवन करें। परन्तु यदि एसीडिटि है तो यह न करें।

–शयन कक्ष में छत पर डाम बनाएं।

–रोगी यदि एक ही कमरे में लम्बे समय तक है तो उसे अन्यत्र कमरे में सुलाएं।

–रोगी के पैर द्वार, खिड़की की तरफ न करवाकर दीवार की ओर रखें।

–रोगी का सर दक्षिण में करके सोना चाहिए।

–रोगी के कमरे में पूर्व दिशा, उत्तर पूर्व का स्थल प्रकाश व्यवस्था हेतु खुला रखें। भाग की तरफ या दक्षिण पश्चिम की तरफ स्थानांतरित करें। घर के सम्मुख भारी समान न रहने देवें।

–रोगी के कमरे में अटाला न रहने देवें।

–ईशान दिशा भगवान की दिशा कहलाती है। उसमें शौचालय या गंदगी न रहने देवें, यह रोगों का जन्म दाता होती है।

रोग आमंत्रण

–यदि शौचालय में बैठते समय उत्तर के अलावा अन्य दिशा में मुख करके बैठे तो रोगों को आमंत्रण देना होगा। इससे बचें।

–शयन कक्ष में जूठे बर्तन रखना, बंद घड़ियां, कबाड़, गंदगी रोग लाएगा।

–प्रवेश द्वार दक्षिण में हो या दीवारों पर दरारें हैं तो मासिक धर्म की तकलीफ पैदा होगी।

–पूर्व के अलावा अन्य दिशा में खुला स्थान रोगों को आमंत्रण देता है।

शेष पेज 12 से आगे..............

माना गया है। ललाट पर नियमित रुप से तिलक लगाते रहने से शीतलता, तरावट एवं शांति का अनुभव होता है। मस्तिष्क के रसायनों सेराटोनिन व बीटाएंडोरफिन का स्राव संतुलित रहने से मनोभवों में सुधार आकर उदासी दूर होती है। सिर दर्द की पीड़ा नहीं सताती और मेधाशक्ति तेज होती है। मन निर्मल होकर हमें सद्पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है। विवेकशीलता भी रहती है और आत्म–विश्वास बढ़ता है।

आमतौर पर चंद, कुंकुम, मृत्तिका, भस्म का तिलक लगाया जाता है। चंदन के तिलक लगाने से पापों का नाश होता है, व्यक्ति संकटों से बचता है, उस पर लक्ष्मी की कृपा हमेशा बनी रहती है, ज्ञान तंतु संयमित व सक्रिय रहते हैं, मस्तिष्क को शीतलता और शांति मिलती है। कुंकुम में हल्दी का संयोजन होने से त्वचा को शुद्ध रखने में सहायता मिलती है और मस्तिष्क के स्नायुओं का संयोजन प्राकृतिक रुप से हो जाता है। संक्रामक कीटाणुओं को नष्ट करने से शुद्ध मृत्तिका का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यज्ञ की भस्म का तिलक करने से सौभाग्य की वृद्धि होती है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार तिलक लगाने से ग्रहों की शांति होती है। तंत्रशास्त्र में वशीकरण आदि के लिए भी तिलक लगाया जाता है। ❋❋❋

शेष पेज 13 से आगे..............

मिल पाता है।

अब ग्रहों का विभिन्न ग्रहों के नवांश में स्थित होने का फल संक्षिप्त में देखते है।

1. **सूर्य :-** अपने ही द्वादशांश का सूर्य जातक को क्रोधी, कमजोर शरीर अज्ञात भय युक्त, अल्प बुद्धि किन्तु कार्य करने में दक्ष बनाता है। चंद्र द्वादशांश में सूर्य जातक को शील स्वभाव युक्त, सुंदर एवं धन वैभव युक्त बनाते है। मंगल के द्वादशांश में स्थित सूर्य जातक को दुविधा युक्त मन, पाप कर्मरत, रात दंड पानेवाला तथा प्रिय जनों से वियोग पाने वाला बनाता है। बुध के द्वादशांश गत सूर्य जातक को सज्जन मान सम्मान, विद्या युक्त सभी सुख सुविधाओं से युक्त रखता है। गुरु के द्वादशांश में सूर्य व्यक्ति को विविध विषयों का ज्ञाता, वक्ता दीर्घायु एवं सुखी बनाता है। गीत संगीत का शौकीन तथा धार्मिक होता है। शुक्र के द्वादशांश में स्थित सूर्य जातक को विभिन्न कलाओं का ज्ञाता, शूर वीर, अतिथ्य प्रेमी तथा यशस्वी बनाता है। शनि के द्वादशांशगत सूर्य जातक को कृतध्न, दुखी मलिन बुद्धि कमजोर एवं कायर बनाता है।

2. **चंद्रमा:-** अपने ही द्वादशांश चंद्रमा व्यक्ति को विद्वान, धनवान प्रभावशाली वाणी से युक्त प्रेमी तथा शत्रु रहित बनाता है। सूर्य के द्वादशांश में गत चंद्रमा व्यक्ति को आलसी मंदगीत, डरपोक, दुखी एवं लापरवाह बनाता है। मंगल के द्वादशांश में चंद्रमा होने पर जातक सुखी सुंदर वेश भूषा युक्त एवं धार्मिक आस्था वाला होता है। बुध के द्वादशांश में चंद्र होने पर व्यक्ति प्रतष्ठित सुखी, तकनीकी, ज्ञान रखने वाला तथा अविष्कार होता है। गुरु को द्वादशांश में चंद्रमा होने पर जातक अच्छी मेष वाला, सौम्य, सुंदर, आकर्षक, स्नेही सुखी एवं राज कृपा पाने वाला होता है। शुक्र के द्वादशांश का चंद्रमा व्यक्ति को भूमि, भवन, वाहन आदि का पूर्ण सुख देता है। जातक विनम्र स्वभाव का होता है। शनि के द्वादशांश में चंद्रमा होने पर जातक को हर कोई उपेक्षित रखता है। जातक आलसी होता है लेकिन सत्यवादी एवं धन सुख युक्त होता है।

3. **मंगल:-** भूमि पुत्र अपने द्वादशांश में हो तो जातक सुंदर शरीर वाला लेकिन रोग युक्त शरीर, परिश्रमी, व्यसनी तथा महिलओं से दुर्व्यवहार की प्रवृति रखता है। सूर्य के द्वादशांश में मंगल होने पर व्यक्ति झूठ का सहारा लेने वाला कपटी, नीति विरोधी गतिविधियों में संलग्न तथा राज दंड पाता है। चंद्र के द्वादशांश में मंगल जातक को सुखी समृद्ध, भ्रात सुखयुक्त, सुंदर शरीर वाला विद्वान बनाता है। बुध के द्वादशांश में मंगल होने पर व्यक्ति परिश्रमी सुंदर पत्नी से युक्त बहुमूलय वस्त्राभूषणों से युक्त होता है लेकिन अपनी गल्तियों के कारण राज दंड पाता है। गुरु के द्वादशांश में मंगल जातक को तर्कशाली, विद्वान, भाग्यशाली, स्वतंत्र विचार धारा का पोषक तथा सम्पन्न बनाता है। शुक्र के द्वादशांश में होने पर जातक महिलओं का प्रिय उनके नियंत्रण में रहने वाला सुंदर सौम्य, आकर्षक, उदार, शत्रुहंता एवं सुखी होता है। शनि के द्वादशांश का मंगल होने पर व्यक्ति झगड़ालू, अपने ही लोगों से तिरस्कृत होता है। वाचाल कलह प्रिय सर्वथा चिंता युक्त होता है तथा दुराचारी भी होता है।

4. **बुध :-** अपने ही द्वादशांश का बुध व्यक्ति को विभिन्न कलाओं का ज्ञानवान विद्यायुक्त तथा प्रभुता सम्पन्न बनाता है। सूर्य के द्वादशांश में बुध जातक को हर किसी का विरोधी, शत्रुओं से पीड़ित तथा अपयश पाने वाला बनाता है। चंद्रमा के द्वादशांश में बुध होने पर जातक प्रतापी, विनम्र सदाचारी, कुटुम्ब एवं धन से सुखी होता हैं। मंगल के द्वादशांश में बुध हो तो जातक रोगी, कृश, काय, पापी, दुराचारी तथा बंधुओं का विरोधी होता है। गुरु के द्वादशांश में बुध हो तो जातक सुशील, विनम्र, धर्म परायण यदि बुध शुक्र के द्वादशांश में हो तो जातक धार्मिक तथा धन धान्य से सम्पन्न, साधुस्वभाव तथा भाग्यशाली होता है। शनि के द्वादशांश बुध जातक को क्रूर कर्मा, दरिद्री दुखी दीन–हीन अपव्ययी एवं कपटी बनाता है। व्यक्ति रोगी से कष्ट पाता है।

5. **गुरु:-** अपने ही द्वादशांश में स्थित होने पर गुरु जातक को स्वस्थ्य सुखी, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, भय मुक्त तथा स्त्रियों में प्रिय होता हे। यदि गुरु सूर्य के नवांश में हो तो जातक निर्धन, कुरुप शत्रुओं से युक्त आचार भ्रष्ट तथा सुखी जीवन जीता है। गुरु चंद्रमा के द्वादशांश में होने पर व्यक्ति को राजमान्य, प्रतिष्ठित, लोकप्रिय पुत्र एवं धन से सुखी बनाता है। गुरु मंगल के द्वादशांश में स्थित होने पर जातक दृष्ट बुद्धि धर्म, आचारण हीन, व्यसन युक्त एवं जेल जाने की आशंका युक्त बनता है। शुक्र के द्वादशांश में स्थित गुरु जातक को धन वाहन सुख देता है। जातक सभी चिंता रहित होकर सुखी जीवन जीता है। शनि के द्वादशांश में स्थित गुरु जातक को अश्लीलता का स्वभाव अपराधियो के कारण पीड़ित मलिन, कुरुप दुखी बनाता है।

6. **शुक्र:-** अपने ही द्वादशांश में शुक्र हो तो जातक प्रभावशाली वक्ता, गीत संगीत का प्रेमी, विद्वान, धार्मिक तथा नेतृत्व के गुणों से युक्त होता है। शुक्र सूर्य के द्वादशांश में जातक को क्रोधी, क्रूर अनावश्यक बोलने वाला तथा दृष्ट बनाता है। शुक्र चंद्रमा के द्वादशांश में हो तो जातक सुखी, सामाजिक, परोपकारी, राज कृपा प्राप्त रहता है। शुक्र मंगल के द्वादशांश में जातक को जुआरी, झगड़ालू अविवेकी, कृतघ्न, लेकिन बल सम्पन्न तथा स्त्रियों का प्रेमी बनाता है। शुक्र बुध के द्वादशांश में होने पर जातक विद्यावान, प्रतिष्ठित, सुंदर धनी तथा भाग्यशाली होता है। शुक्र गुरु के द्वादशांश में जातक को सौम्य, अभिमान रहित, प्रगतिशील तथा संतान धान से सुखी बनाता है। शुक्र शनि के द्वादशांश में व्यक्ति को भाग्य हीन, दुखी, शत्रु भय से मुक्त लेकिन रोग पीड़ित बनाता है।

7. **शनि:-** अपने ही द्वादशांश में हो तो जातक स्थिर बुद्धि वाला, धैर्य युक्त, मुखिया प्रतिष्ठावान होता है। दुराचारी होने की आशंका रहती है। यदि शनि सूर्य के द्वादशांश में हो तो जातक नीच, बुद्धि अधर्मो व्यर्थ बोलने वाला होता है। शनि चंद्रमा के द्वादशांश में हो तो जातक सद बुद्धि लाभ पाने वाला, गीत संगीत का प्रेमी कला निपुण तथा यशस्वी होता है। शनि मंगल के द्वादशांश में हो तो व्यक्ति चालाक, धोखा धड़ी करने वाला पित्तविकार से पीड़ित तथा डरपोक होता है। शनि बुध के द्वादशांश होने पर व्यक्ति प्रतिभा सम्पन्न सुखी धार्मिक प्रवृत्ति तथा न्याय प्रिय होता है। शनि गुरु के द्वादशांश में होने पर जातक प्रतिष्ठित मानवीय, संकोचीस्वभाव बंधु बॉधवों का स्नेही, धन वैभव युक्त तथा न्याय प्रिय होता है। शनि शुक्र के द्वादशांश में हो तो जातक भाग्यशाली सफल भोजन का शौकीन सुंदर एवं वस्त्र आभूषणों से युक्त सुंदर पत्नी का पति होता है।

उपरोक्त फल द्वादशांश स्थिति के है लेकिन फल कथन में सभी षडवर्गो पर समन्वय युक्त फल देखना चाहिऐ यदि षोडश वर्गो पर विचार कर लिया जाये तो अति सटीक फल कथ्थन किया जा सकता है।

❋ ❋ ❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262